thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वीर विजय

का विशेषांक

वर्ष : 30 अंक : 1, 25 मार्च -25 अप्रैल, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,112

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर

1 जून से 14 जून 2015 ई.

स्थान–गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरयाणा)

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सुरम्य वातावरण में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से 1-14 जून, 2015 तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर का विशाल स्तर पर आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल की आर्य वीर, शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में भाग लेने के इच्छुक आर्य वीर पहले किये शिविरों के प्रमाण पत्रों की फोटोकापी, अपने दो फोटो और आर्यवीर दल अथवा आर्य समाज के अधिकारियों का संस्तुति पत्र साथ लेकर आयें।

शिविर में अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा। अनुशासन भंग करने की स्थिति में शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकेगा।

आवश्यक सामान :- गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद जूते, सफेद मोजे, सफेद शर्ट, सफेद सैण्डो बनियान, लाल लंगोट, लाठी, नोटबुक, हलका बिस्तर तथा अन्य उपयोगी सामान।

प्रवेश शुल्क : आर्य वीर 300 रु., शाखानायक 400 रु., उपव्यायाम, व्यायाम शिक्षक 500 रु.। शिविरार्थी को पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

नोट :- शिविर में नवम कक्षा उत्तीर्ण अथवा 15 वर्ष से अधिक आयु वाले शिविरार्थी को ही प्रवेश दिया जायेगा।

मार्ग - रेलगाड़ी से आने वाले फरीदाबाद स्टेशन से सराय ख्वाजा बस या टैम्पो द्वारा पहुँचकर गुरुकुल पहुँचे। दिल्ली की ओर से आने वाले बस या मैट्रो द्वारा बदरपुर या सराय ख्वाजा से गुरुकुल पहुंचे।

- निवेदक -

आचार्य विजयपाल प्रधान	आचार्य ऋषिपाल	स्वामी देवव्रत
मो.: 09416055044	मो.: 09811687124	मो.: 09868620631
मा. रामपाल आर्य मन्त्री	प्रेम कुमार मित्तल मन्त्री	प्रधान सञ्चालक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
	नन्दकिशोर शास्त्री	प्रधान व्यायाम शिक्षक
		सार्वदेशिक आर्य वीर दल

ऋग्वेद

|| ओ३म् ||

यजुर्वेद

देव दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

के.एल. महता दयानन्द पब्लिक स्कूल्ज़
के.एल. महता दयानंद महिला महाविद्यालय

देव दयानंद के सच्चे शिष्य बन
शिक्षा का अलख जगाया।
पूर्णाहुति में निज-उत्सर्ग कर
सेवा का धर्म निभाया।
ऋषि के सच्चे पथ पर चलकर
'महात्मा' वह कहलाया।।

महात्मा कन्हैयालाल महता

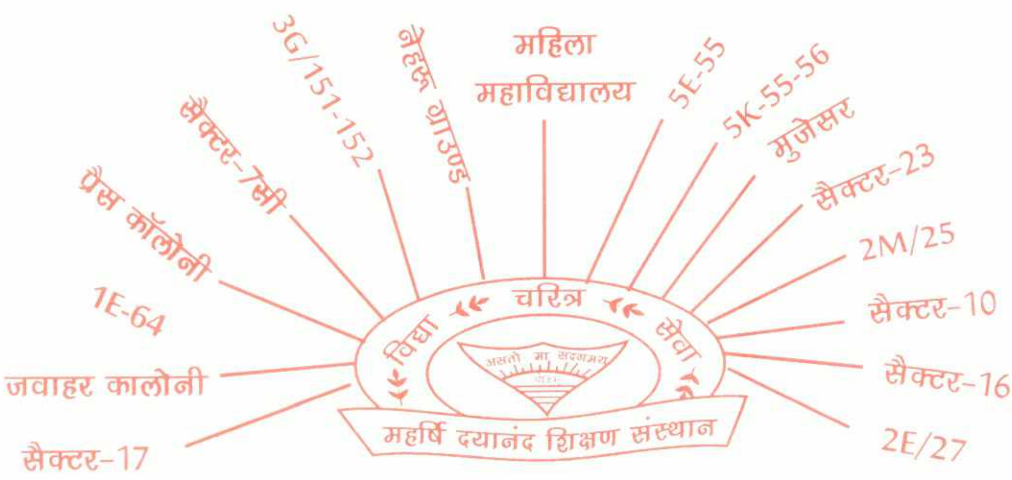

अथर्ववेद

सामवेद

thearyasamaj.org

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- मनोहर लाल आनन्द, प्रधान सम्पादक

1. विदेश में उत्पन्न व्यक्ति देश में मन्त्री नहीं होना चाहिये। **(महर्षि दयानन्द)**
2. नीच पुरुष की विद्याएं उसे पाप कर्म में प्रवृत्त कर देती हैं। **(चाणक्य)**
3. जो सुख-दुःख के बाद मिलता है वह साधारण सुख से कहीं अधिक अच्छा होता है। कड़ी धूप से पीड़ित व्यक्ति के लिये पेड़ की छाया विशेष रूप से सुख देने वाली होती है।
4. नमक की खान में पड़ी हुई हर चीज नमक बन जाती है, समुद्र में गिरने वाली हर नदी का मीठा जल खारी हो जाता है, गुणी लोगों में प्राप्त करते ही गुण दोष बन जाते हैं।
5. कच्चे हरे नारियल का जल मधु मिश्रत एक प्रभावकारी टानिक है।
6. सुखी रहने के तीन उपाय है- प्रिय भाषण, परोपकार एवं सत्संग। **(आचार्य शास्त्री)**
7. अत्यन्त क्लेश से, धर्म के त्याग से और दुश्मनों के पैरों पड़ने से जो धन प्राप्त हो वह मुझे नहीं चाहिये। **(चाणक्य)**
8. निन्दक और जहरीले सांप दोनों के दो-दो जीभ होती हैं। **(तमिल कहावत)**
9. सब उपजातियाँ भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि वे मनुष्य से आयी हैं, नैतिकता हर जगह वही है, क्योंकि वह ईश्वर से आयी है। (बाल्टेर)
10. धनुर्धारी की परख उसके धनुष से नहीं, लक्ष्य बेध से होती है। **(महाभारत)**

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

आर्यसमाज का अमर-सन्देश

– डॉ. महेश विद्यालंकार

वैदिकधर्म

वैदिकधर्म सत्य पर आधारित प्राचीनतम धर्म है। इसके सिद्धान्त, आदर्श, विचारधारा और मान्यताएँ सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वजनीन हैं। यह ईश्वर द्वारा प्रवर्तित धर्म है तथा इसकी उत्पत्ति सृष्टि के आरम्भ में हुई। इसलिये यह सृष्टि का प्राचीनतम धर्म कहलाता है। यह सत्य है कि धर्म एक ही होता है, जबकि सम्प्रदाय, पंथ, मत, मजहब आदि अनेक होते हैं। इनके बनाने और चलाने वाले कोई न कोई गुरु, महन्त, सन्त, महापुरुष, मसीहा तथा पैगम्बर होते हैं। इसमें बनाने वाले के विचारों, ग्रन्थों व उनके व्यक्तिगत जीवन का ही प्रचार एवं प्रसार होता है, जैसे-कबीरपंथ में केवल कबीर के जीवन, विचार और उनकी लिखी पुस्तकें ही सब कुछ हैं, वैदिकधर्म में परमात्मा, वेद ज्ञान, मानवधर्म और सृष्टिधर्म का चिन्तन-मनन है। इसमें प्राणिमात्र के कल्याण और उनके सुख-शान्ति की मंगलकामनाएँ हैं।

वैदिकधर्म के सिद्धान्त, मान्यताएँ, आदर्श, आदेश-उपदेश सभी वैज्ञानिक, सृष्टिक्रम के अनुकूल, तर्क एवं प्रमाणयुक्त, व्यावहारिक, उपयोगी तथा आधुनिकता से परिपूर्ण हैं। वही सिद्धान्त, विचारधारा व जीवनमूल्य स्थायी व स्थिर रहते हैं, जो सत्य पर आधारित, विज्ञान-सम्मत, तर्क एवं प्रमाण से युक्त होते हैं। इस कसौटी पर वैदिकधर्म

thearyasamaj.org

पूर्ण खरा उतरता है। अन्य पंथ-सम्प्रदाय व मजहब 'बाबावाक्यं प्रमाणम' 'सत्यवचन महाराज' में विश्वास करते हैं। उनके यहाँ तर्क करने, प्रश्न पूछने, वैज्ञानिक तर्कयुक्त सोच का निषेध है। इसी कारण आज सम्प्रदायों, पंथों, मतों, पीठों, गुरुओं, महन्तों, सन्तों, महाराजों और भगवानों की भीड़ बढ़ रही है। भीड़ और भेड़ में विवेक नहीं होता है। इसी का परिणाम है कि दिन-प्रतिदिन अन्धश्रद्धा, अन्धविश्वास, ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम, आधारहीन चमत्कार, पुजापा, चढ़ावा, व्यक्तिपूजा इत्यादि धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर फलते-फूलते तथा बढ़ते जा रहे हैं, लेकिन वास्तविक धर्म मनुष्य के हाथ से फिसलता जा रहा है, उसके स्थान पर ढोंग, आडम्बर व प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। वैदिकधर्म अपनी प्रामाणिक जीवन-चेतना, अपनी सच्चाई तथा सफाई के कारण अलग पहिचान रखता है। इसका मुखर स्वर मानवतावाद है। इसकी विचारधारा में विशालता, उदारता, व्यापकता, उच्चता, एकता, समन्वय, विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति आदि के गुण हैं। इसमें सारे पंथ, मजहब व सम्प्रदाय समाहित हो सकते हैं। वैदिकधर्म की अवधारणा है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह सारा संसार एक परिवार है। 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' सभी दिशाएँ मेरी मित्र बन जायें, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' प्राणिमात्र सुखी हो, सभी का कल्याण हो, ऐसी विराट् और उदात्त मूलचेतना वैदिकधर्म की महत्वपूर्ण विशेषता और आकर्षण है। इसलिए वैदिकधर्म ही सच्चे अर्थ में सत्यधर्म है।

आर्यसमाज

आर्यसमाज दो शब्दों से बना है-'आर्य' जो सब प्रकार से श्रेष्ठ हो, जिसका जीवन तथा जगत् आर्यत्वपूर्ण हो। 'समाज' का अर्थ है-समूह या संगठन। श्रेष्ठ लोगों के संगठन व संस्था का नाम 'आर्यसमाज' है। जिसे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 को मुम्बई में स्थापित किया। आर्य शब्द जातिवाचक न होकर गुणवाचक है। यदि हमारे जीवन में श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव, व्यवहार तथा आचरण है, तभी हम सच्चे अर्थ में आर्य कहलाने के योग्य हैं। आर्य बनना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है, साधना व तपस्या है, यह बहुत ऊँची पदवी है, इसकी अलग पहिचान है। आज लोग समाजी तो बन रहे हैं, पर आर्य नहीं बन पा रहे हैं। यह मूल में भूल हो रही है। ऋषि ने हमें उपदेश व सन्देश दिया कि पहले सच्चे अर्थ में आर्य बनो, तभी श्रेष्ठ एवं आदर्श समाज बन सकेगा।

जिस प्रकार अन्य पंथ, मजहब, सम्प्रदाय, मत या पीठ हैं, उस प्रकार आर्यसमाज नहीं है। यह वैदिकधर्म की उद्धारक, प्रचारक एवं प्रसारक संस्था है। इसकी विचारधारा वेद पर आधारित, सत्य पर प्रतिष्ठित और विज्ञानसम्मत है। इसका उद्देश्य तथा सन्देश है-'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' आर्यसमाज के दस नियमों में शारीरिक, आत्मिक विश्वबन्धुत्व व मानवता के सूत्र है। इनमें पंथ, सम्प्रदाय, मत आदि की संकीर्ण कट्टरता च हठवादिता नहीं है। इनमें प्राणीमात्र के कल्याण का भाव विद्यमान है। इनमें वेदों का सार व पूर्णता है। इस उद्देश्य में सम्पूर्ण विश्व के निर्माण, उत्थान और मंगल की भावना निहित है। ऐसी विराट् और उदात्त भावना से बढ़कर अन्य कोई विचारधारा विश्व में नहीं है। इस सन्देश में समूची मानवता का हित, उसके जीवन की सार्थकता तथा वेदों का सार समाहित है। आर्यसमाज विश्व में अकेली ऐसी संस्था है, जिसके सभी सिद्धान्त, विचार व आदर्श वेद पर आधारित हैं। इसकी पूंजी वैचारिक सम्पदा है। ऐसा प्रमाणिक चिन्तन एवं जीवन दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है।

आर्यसमाज का नारा है-'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सारे संसार को उच्च, दिव्य तथा श्रेष्ठ बनाओ। यह अमर सन्देश वेद से लिया गया है। आर्यसमाज ईश्वर और वेदपथ का अनुयायी है। इसके संस्थापक युगप्रवर्तक ऋषि दयानन्द की स्पष्ट घोषणा थी- 'मैं कोई नया पंथ, मत, सम्प्रदाय, गद्दी, पीठ आदि नहीं चलाना चाहता हूँ, मैं तो ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्तसत्य सनातन वैदिकधर्म को ही प्रकाशित, प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहता हूँ।'

आर्यसमाज एक वैचारिक क्रान्ति, आन्दोलन तथा सुधारक बुद्धिवादी चिन्तनधारा है। इसका वैचारिक चिन्तन, मान्यताएँ, आदर्श आदि जीवन-जगत् को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग बताते हैं। इसकी विचारधारा जीवन की जटिलताओं का समाधान देती है। इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं- वैज्ञानिकता, प्रामाणिकता, आधुनिकता, व्यावहारिक उपयोगिता आदि। आर्यसमाज का आविर्भाव देश, धर्म, जाति की रक्षा, वेदप्रचार, मानव-उत्थान, मानव निर्माण, विचार परिवर्तन और चरित्रनिर्माण करने के साथ-साथ ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, गुरुडम आदि को मिटाने

thearyasamaj.org

के लिये हुआ था। इसकी शुरु से भूमिका रही है-जागते रहो, जगाते रहो। जब भी, जहाँ भी, महापुरुषों, धर्मग्रन्थों, जीवनमूल्यों, संस्कृति-सभ्यता आदि पर संकट व आक्रमण हुआ, वहीं आर्यसमाज भारतीय संस्कृति की वीरभुजा बनकर रक्षा के लिये खड़ा मिला है। आर्यसमाज वेदविरुद्ध मान्यताओं, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतकश्राद्ध, गुरुडम, व्यक्तिपूजा, अवैज्ञानिक धार्मिक कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, पुजापे-चढ़ावे आदि में विश्वास नहीं करता है। वह, जो सत्य, वेदानुकूल, विज्ञानसम्मत प्रामाणिक बाते हैं, उन्हें महत्व देता है। तभी इसके लिये कहा गया है-जहाँ-जहाँ आर्यसमाज है, वहाँ-वहाँ जीवन है। मदनमोहन मालवीयजी का यह कथन सत्य है-आर्यसमाज हिन्दुत्व की रक्षा का सबसे बड़ा प्रहरी है। यदि आर्य जागृत, गतिशील और संगठित रहेगा तो संस्कार, संस्कृत, संस्कृति, जीवनमूल्य आदि सुरक्षित रहेंगे। आर्यसमाज का अतीत तप, त्याग, सेवा, आस्तिकता, सिद्धान्तप्रियता, बलिदान, चारित्रिक आकर्षण, ऋषिभक्ति तथा क्रियात्मक जीवन से अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। आर्यसमाज सर्वदा वेदविरुद्ध बातों का खण्डन तथा सत्य सिद्धान्तों का पथप्रदर्शन करता रहा है। इसी कारण इतने अल्प समय में आर्यसमाज ने जो प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति, निर्माण, सुधार, परिवर्तन आदि के कार्य किए हैं, वे सदा स्मरणीय, वन्दनीय व पूजनीय रहेंगे। यह निर्विवाद सत्य है कि आज भी सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज है। इसके पास मौलिक विचारशक्ति तथा उसे क्रियान्वित करने की क्षमता है। यही विचारशक्ति संसार को नई दृष्टि और सृष्टि दे सकती है। आज के जीवन तथा जगत् को आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता, उपयोगिता तथा व्यावहारिकता है। जितना आर्य विचारधारा का प्रचार एवं प्रसार होगा, उतना ही मानव समाज पाप अधर्म, बुराइयों, दोषों, विवादों आदि से छूटकर जीवन को सफल व सार्थक कर सकेगा। आर्यसमाज की संक्षिप्त और प्रमुख मान्यताएँ व आदर्श इस प्रकार हैं-

एकेश्वरवाद

दुनियाँ का सबसे विवादास्पद कोई विषय रहा है तो वह परमात्मा का है। संसार परमात्मा को मानता है, मगर उसके सत्यस्वरूप को जानता नहीं है। आर्यसमाज का सन्देश है कि पहले परमात्मा के स्वरूप, कार्यों, नियमों आदि को जानो, फिर उसका पूजा-भक्ति-प्रार्थना-उपासना आदि करो। आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का सत्यरूप प्रस्तुत किया गया है। अन्त में कहा है-'उसी की उपासना करनी योग्य है।' परमेश्वर कण-कण और क्षण-क्षण में सर्वत्र विद्यमान है। वह व्यक्ति नहीं शक्ति है, वह अजन्मा है, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त है, उसकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती है, गुण-कर्म-स्वभाव से उसके अनेक नाम हैं, उसका निज नाम ओ३म् है, वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।

ईश्वर और जीव ये दोनों एक नहीं है। ईश्वर सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक है, जबकि अल्पज्ञ तथा एकदेशीय होने के कारण जीव सर्वशक्तिमान् तथा सर्वव्यापक नहीं हो सकता। परमेश्वर सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं संहार तथा कर्मानुसार जीवों को फल प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त जीव के पास शाश्वत आनन्द नहीं है, आनन्द का स्रोत केवल प्रभु है, इस कारण वह आनन्दस्वरूप कहलाता है। परमेश्वर की दया, कृपा व सान्निध्य के बिना जीव को आनन्द प्राप्ति नहीं हो सकती है। आनन्द की प्राप्ति, सांसारिक दुःखों व कष्टों का शमन तथा जन्म-मरण के चक्र के बन्धन से मुक्ति-के लिए प्रभु की शरण ही एकमात्र मार्ग है।

ईश्वर कभी शरीर धारण कर अवतार नहीं लेता है। इसलिये उसकी मूर्ति नहीं हो सकती है। वेद स्पष्ट घोषणा करता है कि निराकार होने के कारण-'न तस्य प्रतिमा अस्ति' सर्वव्यापक परमेश्वर की कोई आकृति नहीं बन सकती है। ईश्वर के स्थान पर कल्पित देवी-देवताओं एवं महापुरुषों की मूर्तियों की पूजा वेदविरुद्ध तथा अवैज्ञानिक है। मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करना, उन्हें खिलाना-पिलाना, झूला-झूलाना, धूप-दीप दिखाना, भोग लगाना आदि अन्धश्रद्धा व अज्ञान है। जो ईश्वर सर्वत्र व्यापक और जो सदा हमारे साथ रहता है, असली परमात्मा की पूजा-भक्ति, उपासना आज्ञा का पालन करना हमसे छूट रहा है।

आज देखने में आ रहा है कि लोग अनेक नकली देवी-देवताओं, गुरुओं, महन्तों, महाराजों, भगवानों आदि की बढ़-चढ़कर चरण-वन्दना, स्तुति, गुणगान, पूजा-पाठ आदि कर रहे हैं। यह पूजा न होकर परमात्मा के नाम पर प्रदर्शन व व्यापार हो रहा है। गलत हथकंडों से भोली-भाली जनता को खूब लूटा जा रहा है। बौद्धिक रूप से जागरुक तथा अपने को आधुनिक समझने वाला पढ़ा-लिखा वर्ग भी

thearyasamaj.org

परमात्मा के नाम पर अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड और गुरुडम में फँस रहा है। आर्यसमाज का चिन्तन ईश्वर का सीधा, सच्चा तथा उसकी प्राप्ति का सरल मार्ग बताता है।

प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा सभी स्थान पर तथा हर समय उपलब्ध है। एक परमात्मा ही उपासना करने के योग्य है। महापुरुषों के चरित्र का अनुकरण करो। चित्र का सम्मान करो। जो श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र की विशेषताएँ हैं, उन्हें अपने जीवन में धारण करो। यही उनकी सच्ची पूजा है। महापुरुषों की चरणवन्दना के साथ कर्मवन्दना भी करो। केवल पैर छूने, आरती उतारने, वाणी से जप-कीर्तन-पाठ-आरती आदि गाने से जीवन नहीं बदलते। जीवन बदलते हैं, कर्मों के सुधारने से, बुराइयों व दोषों को छोड़ने से, परमेश्वर के बताए रास्ते पर चलने से। तभी कहा गया है कि परमात्मा का आज्ञा का पालन करना ही सच्ची भक्ति है-'बुरी आदतों को सुधार ले बस हो गया भजन।'

आर्यसमाज प्रभुप्राप्ति के साधन शुद्धज्ञान, शुद्धकर्म तथा शुद्ध उपासना मानता है। बुद्धि की शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है। गायत्री बुद्धि की शुद्धि का मन्त्र है। हमारी सारी प्रार्थनाओं में प्रभु से सद्बुद्धि की कामना की गयी है। भगवती का एक अर्थ बुद्धि भी है। श्रेष्ठबुद्धि को जागृत रखने से मनुष्य पाप-अधर्म व बुराइयों से बचा रहता है, यही असली भगवती जागरण है। आर्य विचारधारा में परमेश्वर का स्वरूप वेदानुकूल, स्पष्ट, तर्क, प्रमाण, सृष्टिक्रम तथा वैज्ञानिक आधार पर स्वीकार किया गया है। आर्यसमाज सच्ची आस्तिकता का सबसे बड़ा पक्षधर है।

वेदज्ञान

आर्यसमाज की मान्यताओं का मुख्य आधार वेद है। इस संस्था के संस्थापक ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' इस सत्य का उद्घोष करते हैं। ऋषि ने वेदविद्या का पुनरुद्धार किया, उन्होंने पुनः वेदज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान के पद पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने प्रतिपादित किया कि वेद सबके हैं और उन्हें सबको पढ़ने का अधिकार है। यह ऋषि दयानन्द की ही प्रतिभा का चमत्कार है कि उन्होंने वेदों के उपदेश और शिक्षाओं को जीवन व जगत् से जोड़ा। उनका नारा था-'वेदों की ओर लौटो। वेदों को मानो। संसार के सभी स्त्री-पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार है।'

यह मानवता का दुर्भाग्य तथा कलंक था कि स्त्रियों तथा शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया था। ऋषि और आर्यसमाज ने इस कलंक को धो दिया। आज बिना किसी भेदभाव के सभी लोग वेद पढ़ और पढ़ा सकते हैं। वेदों में व्यक्ति, भूगोल, देश, प्रान्त, जाति, वर्ग आदि का इतिहास नहीं है। वेदों में प्रभु की रचना, नियम, व्यवस्था, विधि-निषेध का उपदेश तथा सन्देश है। वेदों में बीजरूप में सभी विद्याओं का वर्णन है। इसी कारण वेद सब सत्य विद्याओं का आधार माना जाता है। वेदज्ञान संसार को भारत की महत्वपूर्ण देन है। वेदविद्या जीवन तथा जगत् को सच्ची सुख-शान्ति-प्रसन्नता की कुंजी है, वेदज्ञान हमें जीना सिखाता है।

वेदों की रक्षा और उसके प्रचार एवं प्रसार का दायित्व वसीयत और विरासत में आर्यसमाज को मिला है। यदि हम आर्यसमाज से वेदज्ञान को निकाल दें, तो उसमें कुछ बाकी नहीं रह जाता है। आर्यसमाज तथा इसकी संस्थाओं में यज्ञों का सत्यस्वरूप देखने को मिलता है, जिसमें पवित्र वेदमन्त्रों का उच्चारण होता है। वेद को जीवित रखने के लिये वेदसम्मेलन, वेदकथाएँ, वेदपाठ आदि के आयोजन में आर्यसमाज की आधारभूत भूमिका है। इसीलिये ऋषि का आदेश है-वेदप्रचार आर्यसमाज का मुख्य कार्य व उद्देश्य है। वेदप्रचार से ही अज्ञान, अविद्या, पाप, अधर्म, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम आदि दूर होंगे। आज वेदप्रचार घट रहा है, व्यर्थ की बातें, आडम्बर और प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। आर्यो! समाजमन्दिरों में वेदाध्ययन शालाएँ खोलो। लोगों को वेदों की ओर ले चलो। जो आर्यसमाजी बनाने की फैक्टरियाँ हैं-गुरुकुल, आश्रम, संस्थाएँ, उपदेशक महाविद्यालय आदि, वहाँ वेदों के पठन-पाठन को प्रमुखता देने की जरूरत है। दान, चन्दा, सम्पत्तियों, किरायों आदि में जो आमदनी, सभा, संगठनों व समाजों को हो, वह वेद प्रचार तथा वेदाध्ययन में लगाना चाहिए। वेदों पर रिसर्च की बड़ी आवश्यकता है। जो वेदों में सत्यविद्याएँ हैं, उन्हें खोजकर लोगों तक पहुँचाओं, तभी लोग वेदों की ओर आकर्षित होंगे। वेद की ज्योति जलती रहे, मात्र ऐसे नारों से काम चलने वाला नहीं है। वेदों की रक्षा, पठन-पाठन व परम्परा को जीवित रखने के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम की तुरन्त आवश्यकता है।

वेद, यज्ञ तथा योग-ये तीनों बिन्दु निर्दोष व निष्पक्ष हैं, इनके लिये जनता को कहीं भी बुला लो। इन तीनों पर सभी विचारधारा के लोगों की श्रद्धा-आस्था है। वेदज्ञान के

thearyasamaj.org

नाम पर सभी एकमत हैं। आर्यसमाज को वेदप्रचार के लिये पार्कों तथा आम जनता के स्थानों पर समय-समय पर वेदकथाओं का आयोजन करते रहना चाहिये। सत्य है कि आज आम जनता ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, पुजापे-चढ़ावे, गुरुओं, महन्तों, महाराजों और भगतानों से ऊबकर तटस्थ होने लगी है, जनता जीवन और जगत के लिए सत्य मार्ग व विचारों की इच्छुक है। वेदमार्ग ही सत्यज्ञान है और वही सत्य का मार्ग बता सकता है। यही आर्यसमाज की मूलचेतना व सन्देश रहा है। प्रयास यह होना चाहिये कि सभा, संगठन, संस्थाओं व समाज मन्दिरों में बारहों महीनों वेदचिन्तन, वेदप्रवचन, वेद का पठन-पाठन होता रहे। इसी से आर्यसमाज अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकेगा।

त्रैतवाद

दार्शनिक क्षेत्र में ऋषि दयानन्द ने त्रैतवाद की स्थापना की, यह उनका इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। ऋषि का अभिमत है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों अनादि हैं। जिसका न आदि हो और न अन्त हो, उसे अनादि कहते हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति का न कोई आदि है और न कोई अन्त है, इसलिये ये तीनों अनन्त हैं। इस सृष्टि का कर्ता ईश्वर, भोक्ता जीव और भोग्या प्रकृति है। इन तीनों की अलग-अलग सत्ताएँ, शक्तियाँ, सीमाएँ व क्षमताएँ हैं। यह चिन्तन व दृष्टिकोण अपने में तर्कसंगत, वैज्ञानिक, व्यावहारिक व उपयोगी है। जैसे-रोज देखते हैं-दुकानदार, ग्राहक और माल इन तीनों के होने से दुकान चलती है। अगर इन तीनों में से एक भी न हो तो दुकान नहीं चल सकती।

इस सृष्टि का बनाने वाला परमात्मा है, उसके बिना यह संसार न तो बन सकता और न चल सकता है। वह सबका मालिक है, उसकी शक्ति के बिना सृष्टि का एक कण भी नहीं बन सकता। वही दुनियाँरूपी दुकान का मालिक है। जीव जगत् का भोक्ता है। परमेश्वर ने ये सारी सृष्टि जीव के भोग के लिये बनाई है। जगत् में नाना प्रकार की योनियाँ अपने कर्मानुसार भोगों को भोग रही हैं। जो जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पा रहा है। जीव संसार में कर्मानुसार आता है, फल भोगता हुआ कर्मानुसार ही अगली योनि में चला जाता है। जीव जगत् रूपी बाजार का ग्राहक है। सृष्टि की उपयोगिता तभी है, जब इसका कोई ग्राहक हो। बिना ग्राहक के दुकान बेकार है। यह दृश्यमान सृष्टि जीव का भोग्य सामान है। बिना सामान के दुकान का कोई महत्व नहीं होता है, ऐसे ही प्रकृति रूपी सामान का होना भी जरूरी है। यहाँ अनेक प्रकार के भोग्य पदार्थ प्रभु ने जीव के लिये बनाए हैं। तभी कहते हैं-जगदीश्वर ने दुनियाँ मेरे लिये बनाई, मगर मेरी नहीं है। मैं इसका माली हूँ, मालिक नहीं हूँ। संसार के भोगों को उतना भोगो, जितनी जरूरत है, जरूरत से जो भी चीज अधिक संग्रह व भोगी जाती है, वह दुःखदायी बन जाती है।

त्रैदवाद से आर्यसमाज की एक अलग पहिचान है। जीव और ब्रह्म एक नहीं हैं, अतः जीव ब्रह्म का अंश नहीं है। इसके अतिरिक्त जीव कभी ब्रह्म नहीं हो सकता है और न ब्रह्म कभी मनुष्य बन सकता है। दोनों की अलग-अलग सत्ताएँ, सीमाएँ व पहिचान है। ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने द्वैतवाद, तो किसी ने अद्वैतवाद तथा किसी ने अनेकवाद की स्थापना की, मगर ऋषि का उक्त सिद्धान्त व्यावहारिक, वेद और सृष्टिक्रम के अनुकूल तथा तर्क की कसौटी पर खरा है। आर्यसमाज के इस दार्शनिक सिद्धान्त ने संसार को नई दृष्टि, सोच व दिशा दी है। इसलिये इसका महत्व, प्रासंगिकता और उपादेयता सदा बनी रहेगी। केवल आर्यसमाज ही त्रैतवाद का पक्षधर व प्रचारक एवं प्रसारक है।

आवागमन

जीव का शरीर के साथ आना जन्म और शरीर को छोड़ देना मृत्यु कहलाती है। आने-जाने के क्रम को आवागमन कहते हैं। शरीर परिवर्तन का नाम पुनर्जन्म कहलाता है। जीव कर्मानुसार शरीर बदलता रहता है। वह अपने किये हुए कर्मों के फल को भोगने के लिये अनेक जन्मों तथा योनियों में आता-जाता रहता है। यह क्रम अनादिकाल से चल रहा है। जब से सृष्टि बनी है, तभी से जीव न जाने किन-किन भोगयोनियों में जन्मा और भटका है और उसने इस चक्र में फँसकर अनेक दुःख व कष्ट भोगे हैं।

जीव को मनुष्य जन्म अनगिनत पुण्यकर्मों और बड़े सौभाग्य से मिलता है। सभी योनियों में सबसे श्रेष्ठ, उच्च बुद्धिमान् मानव ही माना गया है। वह निष्काम कर्मों के द्वारा आवागमन के चक्र से छूट सकता है। इसके अलावा छूटने का और कोई रास्ता तथा अवसर नहीं है। कुछ ऐसे सम्प्रदाय और मत वाले लोग हैं, जो आवागमन और पुनर्जन्म को नहीं मानते हैं। वे केवल वर्तमान जीवन को ही मानते

thearyasamaj.org

हैं, इसीलिए उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य-खाओ, पीओ, सोओ व मौज करो तक सीमित कर लिया है।

भोग तथा संग्रह के क्षेत्र में दुनियाँ तेजी से दौड़ लगा रही है। हर कोई इसी जीवन में अधिक से अधिक भोगना चाहता है। उन्हें विश्वास ही नहीं है कि अगला जन्म भी है। अधिकांश लोग प्रश्न करते हैं कि अगला जीवन किसने देखा है? अन्धा वह नहीं है, जिसकी आँखें नहीं हैं, अन्धा वह है, जो आँखें होते हुए भी नहीं देखता है। हम सभी प्रतिदिन अनेक योनियों के जीवों को दुःख, कष्ट, अभाव, पीड़ा, बन्धन आदि में देखते हैं, फिर भी हमारी समझ में नहीं आता है। नाली में पड़ा कीड़ा सड़ रहा है, वह भी तो जीव है। हम भी पतित होकर नाली के कीड़े बन सकते हैं। इस चक्र को रोज देखते हैं, फिर भी कहते हैं कि अगला जन्म किसने देखा है?

आर्यसमाज का आवागमन का सिद्धान्त कह रहा है कि पूर्वजन्म था, यह जीवन चल रहा है और कर्मानुसार अगला जन्म होगा। इस क्रम की कोई रोक तथा तोड़ नहीं सका है। यह सिद्धान्त मानव को हिम्मत, सहारा और आश्वासन देता है-चिन्ता नहीं, चिन्तन करो। जब जाग जाओ, तभी सवेरा है। इस जीवन में अगले जन्म का भी चिन्तन करना है। जीवन को समझने और उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीने की जरूरत है। धर्म, कर्म, पुण्य, दान, भक्ति आदि इस जीवन और अगले जीवन के लिये ही संचित किये जाते हैं। इस जीवन का जहाँ समापन होता है, वहीं से अगला जन्म आरम्भ हो जाता है। इस आवागमन के सिद्धान्त से जीव को निरन्तर उन्नति, पुरुषार्थ और सुधरने-संभलने का अवसर मिलता रहता है। इसी से जीव श्रेष्ठ, उन्नत व पवित्र होता हुआ अपने परम लक्ष्य परमात्मा व मोक्ष तक पहुँच जाता है। यह आवागमन का वैदिक सिद्धान्त अपने में पूर्ण वैज्ञानिक व्यावहारिक, उपयोगी और सार्थक है। इसे मानने व विश्वास करने से जीवन तथा जगत् श्रेष्ठ, उन्नत और महान् बन सकता है।

कर्मफल

आवागमन, पुनर्जन्म और कर्मफल का सिद्धान्त तीनों परस्पर जुड़े हैं। आवागमन व पुनर्जन्म का आधार कर्मफल व्यवस्था है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। जो मनुष्य जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसको वैसा ही सुख या दुःख रूप फल अवश्य भोगना पड़ता है। बिना भोगे कर्मफल समाप्त नहीं होता है। कर्मफल के भोग में कोई सम्बन्धी व धन-सम्पदा सहायक नहीं होती है। जिसने जैसा कर्म किया है, उसको वैसा ही कर्मफल अवश्य भोगना पड़ता है। शास्त्र कहता है-अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। यह अकाट्य नियम है, आज तक प्रभु की इस नियम-व्यवस्था का कोई उल्लंघन नहीं कर सका है।

ईश्वर पापों को क्षमा नहीं करता है, न किसी की सिफारिश पापों को क्षमा करा सकती है। यदि पाप, अधर्म, बुरे कर्म करने से पहले हम जाग गए, ज्ञान व विवेक आ गया तो हम पापों से बच जायेंगे। पापकर्म हो जाने के बाद दुनियाँ की कोई शक्ति हमें फल भोगने से बचा नहीं सकती है। जैसा बीज, वैसा फल। जैसी करनी, वैसी भरनी। जैसा बोयेंगे, वैसा काटेंगे। आज गुरु, महन्त, महाराज, तीर्थ, पूजापाठ आदि सभी बुरे कर्मों के फल को माफ करने में लगे हैं। यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है, मनुष्य पाप करता है, मगर पाप के फल से बचना चाहता है। पुण्य नहीं करता है, मगर पुण्य का फल पाना चाहता है। इसी कारण गुरुओं, महन्तों, महाराजों, तीर्थों आदि की भीड़ बढ़ रही है। आर्यसिद्धान्त स्पष्ट कहता है-स्वाध्याय, सत्संग, ईश्वरभक्ति, उत्तमाचरण आदि से आचार-विचार सुधरते व शुद्ध होते हैं, पापवृत्ति छूटती है तथा वासनाएँ क्षीण होती हैं। भविष्य में पाप करने से मनुष्य बच जाता है। जब पापकर्म नहीं होंगे, तो उनका फल भी नहीं भोगना पड़ेगा। सीधा नियम है-फल को देखकर वृक्ष का पता चलता है। यदि हम वर्तमान में दुःखी, अशान्त, परेशान व चिन्तित हैं तो स्पष्ट है कि हमारे कर्म अच्छे नहीं रह हैं। कर्मों का सुधार कर लो, सुखी, शान्त, नीरोगी व सम्मनित बन जाओ। जब तक इन्सान को यह दृढ़ विश्वास नहीं होगा कि जो अच्छे या बुरे कर्म हम कर रहे हैं, उनका फल मुझे ही भोगना पड़ेगा। यह विश्वास होना आवश्यक है कि सर्वव्यापक परमेश्वर की न्यायव्यवस्था से कोई बच नहीं सकता। प्रभु मुझे रगड़ा-रगड़ाकर कर्मफल को भुगतवा ही लेगा। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण संसार है। हम देखते हैं कि न जाने कितने जीव अपने पूर्वकर्मों के कारण कैसे-कैसे कठिन कर्मफलों को भोग रहे हैं। अतः कर्मफल को ध्यान में रखते हुए हमें श्रेष्ठ कर्म करने चाहिये।

कर्मव्यवस्था के साथ पुनर्जन्म जुड़ा है। जगत् में जो नानात्व, वैविध्य, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, धनवान-निर्धन

thearyasamaj.org

आदि का भेद दिखाई देता है, इसके पीछे एकमात्र कारण पूर्वजन्म के कर्म ही हैं। परमात्मा पक्षपातरहित है, हमें जैसा भी, जो भी, वर्तमान जीवन प्राप्त हुआ है, उसका आधार पूर्वजन्म के कर्म ही हैं। शिक्षा, विचार, वातावरण, संस्कार, कर्म, पुरुषार्थ आदि के द्वारा वर्तमान जीवन को उन्नत, श्रेष्ठ, सुखी व यशस्वी बना सकते हैं। मानव को यह प्रभु का वरदान है। वर्तमान जीवन में हम जो कर्म कर रहे हैं, उसके आधार पर अगला जन्म प्राप्त होगा। जो इस जीवन में श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए प्रभु के मार्ग पर चल पड़ते हैं, उनका जीवन तथा जगत् सफल एवं सार्थक हो जाता है, नहीं तो अधिकांश लोग जीवन को पशुवत् जीकर निम्न योनियों में भटकते और दुःखी होते रहते हैं। यदि मानव जन्म पाकर भी स्वाध्याय, सत्संग, प्रभुभक्ति आदि उत्तम कर्म न किये तो उपनिषद् के शब्दों में 'महती विनष्टिः' इससे बढ़कर और कोई हानि न होगी। श्रेष्ठ कर्मों से मनुष्य देवत्व को प्राप्त करता है। अधम कर्म-प्रवृत्ति से इन्सान दानव बनकर स्वयं भी दुःखी होता है, दूसरों को भी दुःखों व कष्टों में डालता है। आर्यसमाज का यह कर्मफल का आदर्श सिद्धान्त मानव को संभलने, सुधरने तथा ऊँचा उठने की प्रेरणा देता है।

धर्म और सम्प्रदाय

आज धर्म के नाम पर नाना पंथ, सम्प्रदाय, मजहब, मत आदि चल रहे हैं और ये दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। जिससे सच्चा धर्म छूट रहा है। सम्प्रदाय फल-फूल रहे हैं। 'जितने सन्त, उतने पंथ' हो रहे हैं। धर्म के नाम पर न जाने क्या-क्या हो रहा है। धर्म और सम्प्रदाय में मौलिक अन्तर है। धर्म परमात्मा द्वारा प्रवर्तित होता है, जबकि सम्प्रदाय मनुष्यों द्वारा बनाए जाते हैं। धर्म सदा रहता है। सम्प्रदाय घटते-बढ़ते रहते हैं। धर्म जोड़ता है, सम्प्रदाय परस्पर झगड़े, विवाद कराते और तोड़ते हैं।

धर्म प्राणिमात्र के साथ प्रेम, सौहार्द और सहयोगपूर्वक जीना सिखाता है, जबकि पंथ एक-दूसरे के बीच में दीवार खड़ी करते हैं। धर्म का सम्बन्ध आत्मा, आचरण तथा कर्त्तव्य से है, वह सुखी, नीरोगी व प्रीतिपूर्वक जीने की कला सिखाता है। धर्म धारण करने, आचरण और कर्त्तव्यबोध का नाम है। धर्म का सम्बन्ध अन्दर से है, बाहर से नहीं। आज धर्म अपना सत्यस्वरूप खोता जा रहा है। वह पाखण्ड, आडम्बर-प्रदर्शन, बाह्य कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा, धर्मग्रन्थों, गुरुओं, महन्तों, महाराजों तक सीमित होकर रह गया है। धर्म का नाम लेकर तरह-तरह की भ्रान्तियाँ, ढोंग, अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा तथा चमत्कार हो रहे हैं। सच्चे अर्थ में धर्म घट रहा है। पंथ, मत, सम्प्रदाय, गुरुपीठ आदि धर्म पर हावी हो रहे हैं। इसीलिये रोज नये-नये अवतार और चमत्कार हो रहे हैं।

आज हम देखते हैं कि कथा, प्रवचन, सत्संग व तीर्थयात्रा सभी धार्मिक मनोरंजन बन रहे हैं, लेकिन इनका स्थायी प्रभाव कम ही नजर आता है। भीड़ को देखकर भीड़ उमड़ रही है, लोग भेड़ की राह पर चल पड़े हैं, विवेक बहुत पीछे छूट गया है। दवाई खाने के बाद मरीज ठीक होना चाहिये, यदि ठीक नहीं होता है तो यह माना जाता है कि दवाई या उसके खाने या उसके परहेज में कहीं कोई कमी रह गयी है। पूजा-पाठ, कथा, प्रवचन सुनने के बाद सोच, स्वभाव व आदतों व व्यवहार में परिवर्तन और सुधार नहीं हो रहा है, अतः लगता है कि कहीं मूल में भूल हो रही है। धर्म का सम्बन्ध कर्म के साथ है। जब अच्छे विचार कर्म में आते हैं, तभी वे धर्म कहलाते हैं। शास्त्र कहते हैं कि धर्म का कोई बाहरी चिह्न नहीं होता है, जबकि सम्प्रदायों के अलग-अलग चिह्न, पहनावे, कर्मकाण्ड, पूजा पाठ-पद्धति आदि हैं। आम आदमी इन्हीं बाह्याडम्बरों को ही धर्म समझ कर ऐसी बातों में ही उलझ रहा है। इनसे धर्म के आत्मिक स्वरूप से कुछ भी लेना-देना नहीं है, इसलिये ये पंथ, मत, गद्दी या मजहब धर्म नहीं हैं।

आर्यसमाज का सन्देश और नारा है-'धर्म को पहचानो, पकड़ो तथा उसका आचरण करो।' आचरण से ही जीवन सुधरेंगे एवं पवित्र होंगे। धर्म मनुष्य का साथ देता है, जिसका धर्म छूट व नष्ट हो गया है, उसका सर्वस्व समाप्त होते देर नहीं लगती है। संसार में अनेक उदाहरण हैं। वैदिकधर्म ही मानव धर्म है। यही एक ऐसा धर्म है, जिसमें मानवमात्र को बिना भेदभाव के एक समान दृष्टि से देखा गया है। सबके कल्याण, उत्थान और सुखमंगल की कामना है। सम्प्रदायों के बढ़ते हुए प्रभाव तथा ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम, व्यक्तिपूजा आदि से आर्यसमाज चिन्तित है। यही एक संगठन ऐसा है, जो असत्य, अवैज्ञानिक, मिथ्या आडम्बरों, सामाजिक बुराइयों आदि का खण्डन करता है, गलत को गलत कहता है। जो सत्यज्ञान युक्त, उपयोगी, तर्कप्रमाण युक्त बातें हैं, उनका समर्थन एवं प्रचार करता है। आर्यसमाज की धर्म तथा

thearyasamaj.org

सम्प्रदायों के बारे में सत्य, वेद व विज्ञानसम्मत सिद्धान्त एवं विचार हैं। इसकी विचारधारा क्रियात्मक है। धर्मपालन से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व महान् व प्रेरक बनता है। सम्प्रदायों से मनुष्य संकीर्ण, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम आदि में फँसता है, इसीलिये आर्यसमाज का सन्देश है-धर्म को धारण करो, सम्प्रदायों को छोड़ो।

आश्रम-व्यवस्था

सामाजिक उन्नति, व्यवस्था तथा अनुशासन के लिये वैदिकधर्म की प्रेरक देन वर्णाश्रम-व्यवस्था है। व्यक्तिगत उन्नति के लिये ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम उपयोगी हैं। जीवन को सन्तुलित, व्यवस्थित, नियमित तथा आत्मोन्नति की ओर चलाने के लिये ऋषियों ने आश्रम-व्यवस्था बनाई। इससे व्यक्ति लोक और परलोक के सभी कर्तव्यों को नियमानुसार कर सके। ऐसा न हो कि व्यक्ति एक प्रकार के कार्यों में ही जीवन भर लगा रहे। इस व्यवस्था से जीवन ऊबता और बेचैन नहीं होता है। यह आश्रम व्यवस्था क्रमिक रूप में पदोन्नत करते-करते व्यक्ति को उसके जीवन लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर करती है। इसमें भोग व मोक्ष, भौतिकता और आध्यात्मिकता का सुन्दर समन्वय है। ऐसी आश्रम-व्यवस्था विश्व के किसी चिन्तन में नहीं है।

भारतीय संस्कृति में जीवन का अन्तिम पड़ाव संन्यास-आश्रम है। ऐसी अद्भुत और दिव्य कल्पना वैदिकधर्म में ही देखने को मिलती है। इस परम्परा से जीवन अनुशासित, प्रेरक, उत्साहित और उद्देश्यपूर्ण बना रहता है। व्यक्ति को भोग के साथ त्याग का तालमेल बैठाना पड़ता है। शनैः शनैः व्यक्ति सांसारिक बुराइयों, दोषों, मोह, माया, अज्ञानता आदि से क्रमशः ऊपर उठता जाता है और जब वह बिल्कुल मोह-माया से अपने को अलग कर लेता है, तब वह संन्यास-आश्रम में प्रवेश करता है। इस जीवनशैली से जीवन में मौलिकता, नवीनता व आकर्षण बना रहता है। आज अधिकांश लोग जीवन के अन्तिम पड़ाव संन्यास आश्रम तक नहीं पहुँच पाते हैं। जीवन की पूर्णता संन्यास आश्रम में ही प्राप्त होती है।

वर्णव्यवस्था

सामाजिक, राष्ट्रीय उन्नति और समरसता के लिये वर्णव्यवस्था मूलाधार है। आर्यसमाज का सन्देश है-वर्णव्यवस्था जन्म से नहीं कर्म से होती है। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र नहीं होता है। अपने गुण-कर्म-स्वभाव व आचरण के अनुरूप व्यक्ति जो वर्ण चुनना चाहे, चुन सकता है। सबके लिये समान और खुला अवसर है।

जाति जन्म से होती है, जबकि वर्ण कर्मों से बनता है। जाति जन्म से लेकर अन्त तक समान रहती है, जबकि वर्ण योग्यता से प्राप्त किया जाता है। योग्यता का अपने अन्दर आधान करने पर शूद्र ब्राह्मण बन सकता है और उसी प्रकार ब्राह्मणत्व के कर्मों से पतित होकर ब्राह्मण शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। जाति प्रत्यक्ष दिखाई देती है, जैसे-कुत्ता, घोड़ा, बिल्ली आदि सामने आने पर उनकी जाति का बोध हो जाता है, जबकि वर्ण पूछना पड़ता है, आप किस वर्णधर्म में हैं? वर्ण चयन करने की मनुष्य को पूर्ण स्वतन्त्रता है, जो बनना चाहे वह बन सकता है। आर्यसमाज ने न जाने कितने शूद्रकुल में उत्पन्न लोगों को ब्राह्मण पदवी पर प्रतिष्ठित किया है। वर्णव्यवस्था भेदभावरहित, व्यावहारिक, समतामूलक, सबको संगठित रखने वाली और सामाजिक उन्नति के लिये उपयोगी व पूर्ण है। इसमें सबको आगे बढ़ने का मौका मिलता है।

देश का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि आज मानव समाज विभिन्न जातियों, वर्णों, सम्प्रदायों आदि में बँटकर परस्पर फूट, कलह और विवादों में उलझ रहा है। लोग जाति और वर्ग की बातें करते हैं, मानवता की कोई नहीं सोच रहा है। समूची मानव जाति एक परमात्मा की सन्तान है। बाकी सारे भेद-दीवारें, दूरियाँ आदि इन्सान की बनाई हुई हैं।

आज देश आरक्षण की आग में फिर जलने लगा है। इसका व्यावहारिक, उपयोगी व समतामूलक समाधान आर्यसमाज के पास है। जो आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक दृष्टि से उपेक्षित, पिछड़ गए, साधनहीन हो गए, उन्हें आरक्षण की जगह संरक्षण दो। उनको आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित करते हुए साधन-सुविधाएँ दो, जिससे वे आगे बढ़ें, उन्नति करें। आरक्षण देकर उन्हें अपंग न बनाओ, औरों की प्रतिभा, योग्यता व क्षमता को कुण्ठित मत होने दो। उनके अन्दर विद्रोह की अग्नि मत भड़कने दो। इससे समाज बँटेगा, बिखरेगा, अनेक समस्याएँ व विवाद आयेंगे। सबको उन्नति का समान अधिकार है। आगे बढ़ने, अपने को उन्नत करने

thearyasamaj.org

के लिये सबके लिये समान द्वार खुले हुए हैं। इसी वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रचारक व प्रसारक आर्यसमाज है। इस आर्यसमाज के समाधान से मानव समाज में एकता, भाईचारा, प्रेम, सहयोग और मानवता का स्वर मुखरित रहेगा।

यज्ञ

आर्यसमाज संस्कारों के सत्यस्वरूप का रक्षक, प्रचारक एवं प्रसारक है। संस्कारों से ही संस्कृति सुरक्षित रहती है। यज्ञ भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है और यह विश्व को भारत की अनुपम देन है। यज्ञ के वास्तविक स्वरूप का चिन्तन, उसकी रक्षा तथा प्राचीन परम्परा का निर्वहण आदि आर्यसमाज की प्रमुख विशेषताएँ हैं। आज भी आर्यसमाज के संगठनों, संस्थाओं, आश्रमों, गुरुकुलों आदि में प्रत्येक कार्य यज्ञ से ही आरम्भ किया जाता है। सुन्दर विधि-विधान युक्त, शुद्ध मन्त्रों से यज्ञ आर्य जगत् में ही देखने को मिलता है। पंचयज्ञ करना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिये अनिवार्य है। इनके करने से जीवन और जगत् में सुख-शान्ति-प्रसन्नता का स्वर्गिक वातावरण बनता है। ये पंचयज्ञ-ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ हैं।

1. ईश्वर की उपासना करना ब्रह्मयज्ञ है।

2. यज्ञ के द्वारा जड़-चेतन देवों को मनाना देवयज्ञ है।

3. माता-पिता, बुजुर्ग, बड़ों का सम्मान, सत्कार, सेवा करना पितृयज्ञ है।

4. विद्वान् संन्यासी, धर्मात्मा, उपदेशक, सन्त आदि की सेवा करना अतिथियज्ञ है।

5. कुत्ता, गाय, चींटी, असहाय जीवों को भोजन देना बलिवैश्वदेव यज्ञ है।

इन यज्ञों से जीवन में शुद्धता, सात्विकता व धार्मिकता आती है। पंच यज्ञ करने से दायित्व व कर्तव्य का बोध तथा जीवन, परिवार और समाज में समरसता बनी रहती है। जो इन यज्ञों को नहीं करता है, उसके जीवन में अशान्ति, तनाव, चिन्ता, भय और अपूर्णता रहती है। पंचयज्ञों के करने से मनुष्य की आयु बढ़ती है।

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

thearyasamaj.org

यज्ञ की अनन्त महिमा है। सभी धर्मग्रन्थों ने यज्ञ का गुणगान किया है। दुनियाँ में परोपकार, त्याग, सेवा, बाँटने, खिलाने, फैलाने आदि का यज्ञ से बढ़कर वैज्ञानिक व उपयोगी तरीका और कोई नहीं है। यज्ञ के माध्यम से हम समस्त प्राणियों को जीवनशक्ति देते हैं। यज्ञ विज्ञान, चिकित्सा और सृष्टि का आधार है। इससे वायु, जल, पृथिवी, आकाश, वातावरण, शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा आदि की शुद्धि तथा मन के विचार व भाव बदलते हैं। यज्ञ से अनेक रोग दूर होते हैं। यज्ञ में जो भी सुगन्ध सभी जीवधारियों के पास पहुँचती है। यज्ञ से प्राणिमात्र का कल्याण होता है। प्राणी शुद्ध वायु लेता है और अशुद्ध निकालता है। यज्ञ इस अशुद्ध वायु को शुद्ध करने का साधन है। इसलिये यज्ञ का सम्बन्ध हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई आदि सभी से है। जो भी श्वास लेता है, उसका सम्बन्ध यज्ञ से है। पर्यावरण की शुद्धि का वैज्ञानिक और व्यावहारिक उपाय यज्ञ है।

परमात्मा का एक नाम यज्ञ है-उसका अखण्ड यज्ञ निरन्तर सृष्टि में चल रहा है। एक पल भी उसका यज्ञ रुकता नहीं है। वह सभी प्राणियों को भरे पेट सुलाता है और भूखे पेट उठाता है। वह सबको दे रहा है। ये सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, वायु, वनस्पति, पशु-पक्षी सभी यज्ञ कर रहे हैं। तभी ऋषियों ने कहा-'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' दुनियाँ में यज्ञ से बढ़कर श्रेष्ठतम कर्म और कोई नहीं है। यज्ञ प्रभु का कर्म है। यज्ञप्रभु-मिलन का मार्ग प्रशस्त करता है। यह स्वर्ग का सोपान, शान्ति, एकता, प्रेम तथा सहयोग का दूत है। यज्ञ से दान, पूजा, संगति का भाव जागृत होता है। यज्ञ का सम्बन्ध जन्म से लेकर मृत्यु तक है। यह वैदिकधर्म की पहिचान है।

ऋषिवर ने यज्ञों के यथार्थ स्वरूप को जनता के सामने रखा और सभी को यज्ञ करने-कराने का अधिकार दिलाया। यज्ञों के नाम पर जो ढोंग, आडम्बर, प्रदर्शन, पुजापा, चढ़ावा, व्यक्तिपूजा, मनमाने विधि-विधान आदि चल रहे हैं, उनसे आर्यसिद्धान्तों की हानि हो रही है। जो सिद्धान्त, परम्परा, आदर्शविरुद्ध बातें हैं, उनसे आर्यजनों को बचना चाहिये। आर्यों ! यदि यज्ञ को प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से रखा जाये तो यह आम जनता से जुड़ने का उत्तम साधन बन सकता है। यज्ञ को साध्य बनाओ, साधन नहीं। आज यह व्यापार का रूप लेने लगा है। यह गलत है। आम लोगों में यज्ञ के प्रति आज अगाध श्रद्धा है, तभी आर्यसमाज कह सकेगा कि यज्ञ हमारी प्रेरक, आकर्षक, कल्याणकारी विशेषता है।

स्वर्ग और नरक

स्वर्ग और नरक किसी स्थान पर नहीं हैं, जहाँ सुख-शान्ति, सन्तोष, प्रेम, एकता सब मिलकर रहते हैं, वहीं स्वर्ग है। जहाँ दुःख कलह, फूट, रोग, चिन्ता आदि हैं, वहीं नरक है। स्वर्ग और नरक इसी शरीर में और इसी संसार में भोगे जाते हैं। विभिन्न मत, पंथों, सम्प्रदाय वालों का इस विषय में मतभेद है। कोई स्वर्ग को चौथे आसमान पर, कोई सातवें आसमान पर और किसी ने इसे क्षीरसागर में स्थित बताया है। इन लोगों ने मनगढ़ंत कल्पनाओं से इन्द्रलोक व स्वर्गलोक बना लिये हैं, वहाँ तरह-तरह के सुख-भोगविलास के पदार्थों का भी हिसाब बैठा लिया है। आर्यसिद्धान्त स्पष्ट कहता है कि यह जीवन, जगत्, घर, संसार, शरीर आदि ही स्वर्ग के आधार हैं। यदि पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-भाई, प्रजा-राजा, पड़ोसी-पड़ोसी, मन्त्री-प्रधान आदि के सोच-विचार व व्यवहार में परस्पर अनुकूलता है, तो वहीं स्वर्ग है।

व्यक्ति अपने कर्मों से ही स्वर्ग और अपने कर्मों से ही जीवन व जगत् को नरक बना लेता है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम जीवन व दुनियाँ को नरक बनाकर जीयें या रोते-तड़पते व्यर्थ की बातों में जीवन-यात्रा पूरी करें। यदि हमारे पास ज्ञान, विवेक, समझ, जागरुकता आदि हैं तो हम जंगल में भी मंगल बना सकते हैं। नरक को भी स्वर्ग बनाकर भोग सकते हैं। यदि जीवन जीने की कला हमारे पास नहीं हैं तो स्वर्ग को भी नरक बनाकर स्वयं दुःखी होंगे और दूसरों को भी चैन से नहीं रहने देंगे। परमात्मा ने जीवन व जगत् को स्वर्ग बनाया, परन्तु मनुष्य इसे नरक बनाकर दुःख, रोग व शोक में जी रहा है। दोष हमारा है, हमें जीना नहीं आता है। रोगी व दुःखी होने पर हम परमात्मा को कोसते हैं, अपने कर्मों के लिए नहीं सोचते। मनुष्य अपने कर्मों से अपनी कब्र खोदता है।

पौराणिक जगत् में जो स्वर्ग व नरक की कल्पना की गई है, सच है कि वह कल्पित, आधारहीन, मनगढ़ंत तथा अव्यावहारिक है। इसमें मनुष्य को पाप-अधर्मों, बुराइयों से छुड़ाने के लिये नरक का भय दिखाया गया है। इसके मूल में यह भाव रहा है कि ऐसा करने से मनुष्य शायद

thearyasamaj.org

सुधर व संभल जाये। इसमें सच्चा इन्सान बनने को प्रेरित करने के लिये श्रेष्ठ कर्म करने का प्रलोभन दिया गया है, जिससे आदमी अपने उद्देश्य से न भटके।

इस दुनियाँ में स्वर्ग-नरक प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। जो जगत् में अनन्त जीव अपने-अपने भोगचक्र में दुःख-कष्ट, अभाव आदि भोग रहे हैं। कोई इन्सान दाने-दाने के लिये मुहताज है तो किसी के गोदाम भरे पड़े हैं। आर्यसमाज का सीधा-सच्चा सन्देश है-स्वर्ग तथा नरक इसी जीवन तथा जगत् में हैं। कोई व्यक्ति अपनी सोच, स्वभाव, आदतों, व्यवहार आदि से उसे स्वर्ग बना लेता है, जबकि कोई इससे विपरीत आचरण करके जीवन को नारकीय बना लेता है। कर्मों को संभालो, सुधारो और ऊँचा उठाओ। स्वर्ग हमारे पास और साथ है।

महापुरुष और अवतार

आर्यसमाज के सिद्धान्त और चिन्तन कहता है- अणु-अणु और कण-कण में सर्वत्र विद्यमान, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, एक परमेश्वर ही उपासनीय है। परमात्मा एक है, अनेक नहीं। वह शक्ति है, व्यक्ति नहीं। वह निराकार है, उसकी मूर्ति, चित्र व आकृति नहीं बन सकती है। इतनी बड़ी अनन्त शक्ति को मूर्ति, चित्र आदि में लाना अज्ञानता और उसके साथ अन्याय है। उसकी अनुभूति हृदय मन्दिर में ही होगी।

महापुरुषों के चरित्र का अनुकरण करो, चित्र का सम्मान करो, चरित्र की पूजा करो। चित्र से चरित्र की प्रेरणा मिलती है। विचार और चरित्र से ही जीवन संभलता व सुधरता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, शिवजी आदि दिव्यगुणों से युक्त महापुरुष थे। ये सभी महापुरुष न तो ईश्वर थे और न ईश्वर के अवतार थे। अवतार शब्द का अर्थ है-ऊपर से उतरना। आर्यसमाज इन्हें श्रद्धेय, पुण्ययात्मा, पूजनीय, महापुरुष के रूप में सम्मान, आदर, श्रद्ध-भक्ति आदि देता है। आर्यसमाज इनके प्रेरक सत्यस्वरूप का सबसे बढ़-चढ़कर प्रचारक, प्रसारक एवं भक्त है। यह मिथ्या, नासमझी व अज्ञानतापूर्ण कथन है कि आर्यसमाज महापुरुषों को नहीं मानता है। जैसा उच्च, दिव्य, महान्, आदर्श रूप इन महापुरुषों का आर्यसमाज मानता है, वैसा शायद ही कोई मानता हो। आर्यसमाज ने ही सच्चे अर्थ में महापुरुषों के सत्य-स्वरूप और योगदान को सुरक्षित रखा हुआ है।

जो आज इन महापुरुषों के नाम, चरित्र व जीवन के नाम पर अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा, ढोंग, पाखण्ड, अश्लील, रामलीलाएँ, कृष्णलीला, रासलीला, भागवत कथाएँ आदि हो रही हैं, उससे इन महापुरुषों के प्रेरक आदर्श तथा गौरवपूर्ण चरित्रों को कलंकित व विकृत किया जा रहा है। इन गलत बातों का आर्यसमाज सदा मुखर विरोधी रहा है। गलत बातों से महापुरुषों का अवमूल्यन हो रहा है।

इस देश ने जितना अन्याय, गन्दगी, पाखण्ड, गुरुडम आदि अपने महापुरुषों के नाम पर किया है, उतना और कहीं नहीं हुआ है। जिन महापुरुषों ने कभी जीवन में भीख नहीं माँगी थी, उन्हें हमने भिखारी बना दिया। जो समाज, देश और समस्त मानवता के लिये आदर्श हैं, उन्हें हमने गली, मोहल्ले का लैला-मजनू बनाकर रख दिया है। क्या यही उन पुण्यात्माओं का सच्चा स्मरण और पूजा है ? कोई भी अन्य विचारधारा वाला इन गलत बातों को रोकने, टोकने व खपण्डन करने के लिये तैयार नहीं है। केवल आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन है, जो महापुरुषों तथा संस्कृति, सद्ग्रन्थों में आई हुई विकृतियों, पाखण्ड, बुराइयों का विरोध करता है। उनके प्रेरक, आदर्श स्वरूप का संसार को दिग्दर्शन कराता है।

सच्चे परमात्मा तथा उसकी भक्ति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा अवतारवाद और मूर्तिपूजा है, अतः आर्यसमाज इनका विरोधी है। इन व्यर्थ की कल्पनाओं और उनकी स्थापनाओं से परमेश्वर एवं भक्ति का वास्तविक सत्य स्वरूप विकृत व विस्मृत हुआ है। पौराणिक जगत् ने अनेक देवी-देवताओं की कल्पना करके सच्चे भगवान् की पूजा छुड़ा दी। अवतार मुख्य हो गए, परमेश्वर गौण हो गया।

आज अनेक गुरु, महन्त, सन्त, महाराज, भगवान् बनकर अपनी अन्धी भक्ति पूजा करा रहे हैं। जड़ देवी-देवताओं की अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा तथा अज्ञानता में खूब शोर-शराबे, आडम्बर, प्रदर्शनपूर्ण भक्ति, पूजा, अर्चना हो रही है। जड़पूजा से लोगों की बुद्धि जड़तव की ओर जा रही है। देवीदर्शन के लिये लम्बी-लम्बी यात्राएँ और रात-रातभर जागकर जागरण किया जा रहा है। देवी की प्रसन्नता के लिये बलि चढ़ाई जा रही है। भक्ति के नाम पर न जाने क्या-क्या ढोंग किये जा रहे हैं ? चारों ओर तेजी से ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान और गुरुडम का जाल फैल रहा है। सभी धार्मिक चैनलों पर कथाओं, सत्संगों, गुरु, महन्तों आदि के कार्यक्रमों में धर्मगुरु बढ़-चढ़कर गुरुडम,

thearyasamaj.org

व्यक्तिपूजा, गुरुवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। सभी लोगों को अपने-अपने आश्रमों के रास्ते दिखा रहे हैं, सच्चे परमात्मा का रास्ता कोई नहीं दिखा रहा है। इससे आध्यात्मिक व धार्मिक विचारों की बड़ी हानि हो रही है, भक्ति, धर्म व परमात्मा दुकान तथा व्यापार का रूप लेते जा रहे हैं।

आर्यसमाज का उदय गलत बातों का खण्डन व विरोध करने के लिए हुआ। भक्ति अन्दर की और जीने की कला है। भक्ति का आडम्बर, प्रदर्शन, पुजापे व चढ़ावे आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्यसमाज का सन्देश रहा है-परमात्मा के सत्यस्वरूप को जानो, मानो और उसकी आज्ञा का पालन करो, यही सच्ची भक्ति है। अवतारों तथा मूर्तिपूजा से सच्चे परमेश्वर की प्राप्ति नहीं होगी। मूर्तिपूजा सच्ची भक्ति की बाधक है। मूर्तिपूजा से अनेक हानियां हैं।

नारी सम्मान

आर्य विचारधारा की सत्य स्थापना रही है कि जहाँ नारी जाति को उचित सम्मान मिलता है, वहाँ देवता निवास करते हैं अर्थात् वह परिवार सब प्रकार के सुख शान्ति सम्पन्न रहता है। नारी इस सृष्टिरचना का आधार है, वह शक्तिरूपा है, नारी से ही नर का जन्म व निर्माण होता है। नारी गृहस्थाश्रम की धुरी है, गृहिणी से ही घर चलता है। जैसे शरीर में जो स्थान व महत्व नाड़ी का है, वही घर में नारी का है। यह उस पर निर्भर है कि वह चाहे तो घर को स्वर्ग या नरक बना दे। वही घर को जोड़ती और तोड़ती भी है। वही घर की लक्ष्मी व शोभा है। उसके अभाव में घर सूना तथा अधूरा है। नारी से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र पूर्णता को प्राप्त करता है। वेद में नारी के महत्व व योगदान का विस्तार से चिन्तन है।

नारी और पुरुष दोनों ही गृहस्थ के बराबर के पहिए हैं। एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों ही एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। दोनों की रचना, गुण-कर्म-स्वभाव, कार्यक्षेत्र और अधिकार अलग-अलग हैं। एक का कार्यक्षेत्र घर से बाहर है तो दूसरे का कार्यक्षेत्र घर रखा गया है। दुनियाँ का सबसे सुखद अच्छा तथा शान्तिदायक स्थान घर माना गया है। घर का दूसरा नाम नारी है। तभी कहा जाता है-**'माता निर्माता भवति'** माँ सन्तान का निर्माण करती है। माता की कोख व गोद बालक की पहली पाठशाला है। माँ बालक

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामयाः

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

- चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

thearyasamaj.org

की पहली गुरु है। बालक को जो चाहे व जैसा चाहे बनाने की क्षमता रखती है। गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म सन्तान को सुसंस्कारित तथा सुविचारित बनाना है। जो दम्पति ऐसा नहीं कर पाते हैं, उनका बुढ़ापा कष्ट, दुःख, चिन्ता, अभाव और रोते-रोते निकलता है। नारी के उत्थान-पतन पर देश-धर्म, संस्कृति, समाज, परिवार, व्यक्ति आदि टिके हैं। नारी जागेगी तो देश जगेगा।

शंकराचार्यों, धर्माचार्यों, कुछ मत, पंथ, सम्प्रदाय, गुरुओं, सन्तों आदि ने नारी की निन्दा की है उसे वेद पढ़ने, गायत्री मन्त्र बोलने, यज्ञ करने, यज्ञोपवीत पहिनने आदि से वंचित किया गया। उसे भोग्या और पैरों की जूती समझा, उसके अधिकार छीने, उसे अनमेल विवाह, बालविवाह, दासी प्रथा, सतीप्रथा आदि कुरीतियों में धकेला गया, उस पर तरह-तरह के अन्याय, अत्याचार किए गए।

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने नारी जाति के सम्मान, महत्व व योगदान की बढ़-चढ़कर वकालत की है। ऋषिवर नारी जाति के मुफ्त के वकील थे। उन्होंने वेद आधारित घोषणा करते हुए कहा कि नारी को वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार है। उसे न केवल वेद पढ़ने-पढ़ाने का अपितु यज्ञ का ब्रह्मा बनने तक का अधिकार है। ऋषि ने उसे भोग्या से पूज्या, पैरों की जूती से उठाकर मस्तक के मुकुट पर प्रतिष्ठित कराया है। उनकी दृष्टि में नारी की शिक्षासर्वोपरि है, क्योकि नारी-शिक्षा राष्ट्र-निर्माण का मूलाधार है। नारी से व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र बनते और बिगड़ते हैं। आर्यसमाज समय-समय पर नारी सुधार, उत्थान एवं जागरण का स्वर मुखरित करता रहा है।

दुःख यह है कि आज की नारी अपने उद्देश्य, स्वरूप, नैतिक मूल्यों, आदर्शों, कर्तव्यों से हट व कट रही है। जो श्रद्धा व सम्मान की पात्र थी, वह विज्ञापन, आडम्बर, प्रदर्शन और वस्तुरूप बनती जा रही है। इसीका परिणाम है-आज व्यक्ति, परिवार, समाज सभी तेजी से टूट, बिखर व अशान्त हो रहे हैं। आधुनिकता की अन्धी दौड़ में नारी अपना स्वरूप, तप, त्याग, सेवा, प्रेम आदि को भुला रही है। नारी का धार्मिक, शिक्षित व सुसंस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। तभी मानव निर्माण संभव है। दहेज-प्रथा, भ्रूणहत्या, अश्लीलता, कामुकता, खुलापन आदि दानवी वृत्तियों से नारी का तेजी से पतन व अवमूल्यन हो रहा है। यह अत्यन्त चिन्तनीय तथा विचारणीय है। ऋषि दयानन्द का नारी उत्थान व उसके सम्मान तथा प्रतिष्ठा में महान् योगदान रहा है। आर्यसमाज का अमर सन्देश है कि जब नारी सुधरेगी, संभलेगी, अपने स्वरूप व कर्तव्य को समझेगी, तभी व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र का कल्याण संभव है।

श्राद्ध-तर्पण

जीवित माता-पिता, बुजुर्ग, परिचित, सम्बन्धी, वृद्धजन, गुरु, विद्वान्, धार्मिक, सच्चरित्र साधु-महात्माओं आदि की सेवा-सहयोग करना, उनके कष्ट, रोग, अभाव, पीड़ा में सहायक बनना, उनके पास बैठना, उनकी बातें सुनना, सम्मानपूर्वक अग्रजभाव से आदर-प्रतिष्ठा देना, समय पर भोजन, वस्त्र, औषधि व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करना-आर्य विचारधारा में सच्चा जीवित श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध का सीधा अर्थ है-जो श्रद्धा, सम्मान तथा प्रेमपूर्वक किया जाये। हमारे यहाँ जीवित श्राद्ध का विधान है, मृतक का नहीं। वैदिक चिन्तन में पंचयज्ञों में तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ है। गृहस्थ का धर्म है कि वह नित्य पितृयज्ञ करे। इससे गृहस्थ-परम्परा सुदृढ़, अनुकूल और प्रेरक बनी रहती है। शास्त्रों में पितर शब्द जीवितों के लिये प्रयोग हुआ है।

तर्पणशब्द का भाव है-तृप्त करना। बड़े दादा-दादी, नाना-नानी व अन्य वृद्धों को खिला-पिलाकर सब तरह से सन्तुष्ट, प्रसन्न व सुखी रखना तर्पण कहलाता है। वैदिक काल में श्राद्ध व तर्पण जीवित पितरों के लिये था। इस जीवित पितृपक्ष को स्वार्थी, लोभी, अनपढ़ ब्राह्मणों ने मृतक-श्राद्ध-पक्ष का रूप दे दिया। वेद का कोई मन्त्र पितरों को मृतक सिद्ध नहीं करता है। यह ध्रुव सत्य है-दूसरों को खिलाने से दिवंगत आत्मा को कुछ नहीं पहुँचता है। शरीर भस्म हो जाने के बाद किसी को पता नहीं है कि मेरे पूर्वजों की आत्मा किस योनि में, किस स्थान पर और किन माता-पिता को प्राप्त हुई है। यदि पता चल जाता तो न जाने कितनी और किस-किस तरह की उलझनें, विवाद व समस्याएँ आ जातीं। आर्यसमाज का प्रामाणिक चिन्तन-मनन व मन्तव्य है कि सच्चा, व्यावहारिक, उपयोगी व सार्थक जीवित श्राद्ध ही सत्य है, वह केवल जीवित पितरों का ही हो सकता है। आज आवश्यकता है दादी-दादी, नाना-नानी, माता-पिता, भाई-बन्धु, परिचित, बुर्जुगों आदि को सम्मान, सेवा, सहयोग, सहानुभूति व प्रेम से संभालें। उनके पास बैठें, उनकी सुनें, उनके प्रति विनम्रता एवं कृतज्ञता का भाव लायें। जिस घर में बड़े बूढ़े संभले रहते हैं, प्रसन्न व सुखी

thearyasamaj.org

रहते हैं, वह घर, समाज, व राष्ट्र स्वस्थ बना रहता है। मृतक श्राद्ध मनगढ़ंत, लोभ-लाभ व स्वार्थ से प्रेरित है। आर्यसमाज गलत रूढ़िवादी बातों के पक्ष में शुरु से नहीं रहा है।

मांस भक्षण

भारत में भोजन पर गहरी खोज, चिन्तन-मनन और विचार किया गया है। भोजन जीवन तथा संस्कृति का मूलाधार है। वैदिक धर्म अभक्ष्य खाद्य पदार्थों का सप्रमाण विरोध तथा निषेध करता है। मांस, मछली, अण्डा, बीड़ी, सिगरेट, शराब व अन्य मादक द्रव्य आदि मनुष्य का खान-पान नहीं है। इनसे इन्सान के तन-मन, आचार-विचार, जीवनदृष्टि आदि में गिरावट आती हैं हिंसक भाव जागृत होता है। लोग स्वाद, आदत व आधुनिकता के कारण अपने पक्ष में चाहे कितने तर्क, दलीलें दे लें, मगर प्रभु-व्यवस्था, प्रकृति-नियम, शरीर-रचना, क्रियाविज्ञान, मानवीय दृष्टि आदि से मनुष्य का भोजन ये पदार्थ नहीं हैं। मूक, निरीह, निरपराध जीवों को मार-काट कर अपने स्वाद के लिये खाना, कहाँ की इन्सानियत है? सभी जीवों का मालिक एक परमात्मा है, उसके बनाए जीवों को यदि कोई मारता है, तो निश्चय ही प्रभु उससे नाराज होंगे, प्रभु को राजी करना है तो प्रभु के बनाए जीवों से प्यार करो। तभी कहा गया है-हिंसक व्यक्ति परमात्मा की भक्ति का पात्र नहीं है।

भोजन का सूक्ष्मभाग मन बनता है, जैसा अन्न वैसा मन। मन के बिगड़ते ही विचार, भाव, सोच बदलते हैं। मन से विचार, विचारों से आचार, आचार से समाचार बनते हैं। आज संसार में तेजी से हिंसा बढ़ रही है। इसके मूल में मुख्य कारण खानपान का दूषित होना है। आज हम भोजनभ्रष्ट हो रहे हैं। विचार करो कि प्रातः सूर्योदय से पूर्व लाखों की संख्या में निर्दोष, असहाय जीवों को मार-काट दिया जाता है। उनकी आहें, दर्द, पीड़ा और अभिशाप की भावतरेंगें वातावरण में रहेंगी। क्या वातावरण में सुख-शान्ति, प्रेम, सहयोग, मानवता आदि के भाव आयेंगे? कदापि नहीं आ सकते। तभी समूचे मानवीय वातावरण में अमानवीय कर्म, हिंसा, लूट-पाट, भ्रष्टाचार, अनाचार, दुःख, दैन्य, बीमारी आदि बढ़ रहे हैं। भोजन मनुष्य में सच्चे अर्थ में मानवीय गुण-कर्म-स्वभाव, आचार-विचार व दृष्टि देता है। परमात्मा ने खान-पान के लिये इतने सुन्दर, स्वादु पदार्थ बनाये हैं, उन्हें छोड़कर मनुष्य मृत जीवों का मांसभक्षण कर रहा है। वैसे मृतक आदमी के छूने पर वह स्नान करता और कपड़े बदलता है। सोचो, विचारो, समझो और अपने को बदलो। क्या कर रहे हो? जैसा भोजन होगा, वैसा मन और विचार बनेंगे और उसी के अनुरूप आचरण होगा।

आर्यसमाज के सिद्धान्त, आदर्श व मान्यताएँ जीवहिंसा तथा अभक्ष्य पदार्थों का विरोध करते हैं। आर्य शब्द में एक भाव यह भी है कि जिसका खान-पान, आचरण शुद्ध, पवित्र व सात्विक है, वही आर्य कहलाने के योग्य है। दुर्भाग्य है कि आज आर्यसमाज में भी कुछ लोग खान-पान की दृष्टि से दूषित व पतित हो रहे हैं। समूचा मानव समाज खान-पान की दृष्टि से राक्षसवृत्ति की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इसके परिणाम बड़े भयंकर, भयावह व क्रूरतम होंगे। आर्यसमाज का यह अमर सन्देश है-यदि सच्चे अर्थ में मानव बनकर देवत्व को पाना है, समूची धरा पर सुख-शान्ति, प्रसन्नता, नीरोगता, मानवता, भाई-चारा लाना है, तो खान-पान ठीक करो, अभक्ष्य पदार्थों के खान-पान को छोड़ दो। इसी में कल्याण है। आज तेजी से हमारा खान-पान बदल रहा है। उसके भयंकर परिणाम हमारे सामने हैं।

जो वर्तमान में तरह-तरह के अन्धविश्वास, रूढ़ियाँ, अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, चमत्कार, धर्म-भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर मत, पंथ, गुरु-महन्त, महाराज, भगवान् आदि बन रहे हैं, जो भोली-भाली अन्धश्रद्धालु जनता को ठगा, बहकाया और गुमराह किया जा रहा है, उनका विस्तार से चित्रण करना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। ऊपर कुछ बातों पर चिन्तन व आर्यसमाज का सत्य दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है।

जो लोक प्रचलित अवैदिक, असंगत, अवैज्ञानिक, अप्रामाणिक बातें हैं, जो आज जीवन, परिवार, समाज व राष्ट्र को दुःख, हानि तथा परेशानियों में डाल रही हैं, जैसे भूत-प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को आर्यसमाज के सिद्धान्त सत्य स्वीकार नहीं करते हैं। यह सब कल्पनामात्र और अज्ञानी, स्वार्थी, अन्धविश्वासी व्यक्तियों द्वारा चलाये गए हैं। राशिफल व फलित ज्योतिष, जादू-टोना, मुहूर्त, शकुन, हस्तरेखा, नवग्रहपूजा, वास्तुशास्त्र, गंगास्नान आदि अनेक बातें असत्य, विज्ञान, वेदविरुद्ध व अव्यावहारिक हैं, इनका आर्यसमाज तर्क, प्रमाण युक्ति व बुद्धिपूर्वक खण्डन व विरोध करता है। इन असत्य, अवैज्ञानिक तथा हानिकारक प्रचलित प्रथाओं को स्वार्थ

thearyasamaj.org

लोभ-लाभ के लिये चलाया गया है और वर्तमान में खूब महिमा-मण्डित भी किया जा रहा है। इस कारण सत्य छूट रहा है।

लोग भय तथा लोभ में फँसकर जघन्य पाप व अपराध करने को उद्यत हो जाते हैं। किसी तान्त्रिक के कहने पर अज्ञानी मनुष्य मासूम बच्चे की बलि भी चढ़ा देता है। कोई देवी को राजी करने के लिये असहाय जीवों की बलि चढ़ा रहा है। रोज अखबारों तथा टेलीविजन पर अज्ञानता, चमत्कारपूर्ण और अन्धविश्वास भरी घटनाएँ तथा सूचनाएँ आती हैं। उन बातों से सिद्ध होता है कि मनुष्य मिथ्या, अन्धश्रद्धा बातों तथा ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम आदि की ओर बढ़ रहा है। कोई गलत प्रथाओं, अज्ञानता भरी बातों का विरोध व सामना करने के लिये तैयार नहीं है। अधिकांश चण्ट, चतुर, चालाक लोग धर्म-भक्ति, परमात्मा व अन्य ढोंगभरी बातों से धन्धा कर रहे हैं।

आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है, जो मिथ्या, मनगढ़न्त, अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास पूर्ण बातों के खण्डन करने के लिये सार्वजनिक रूप से तर्क-प्रमाण से युक्त शास्त्रार्थ करने के लिये सदा उद्यत रहती है। इसी कारण ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, सनातनी सभी विचारधारा वाले लोग आर्यसमाज से अन्दर ही अन्दर डरते हैं, क्योंकि आर्यसमाज के पास सत्य पर आधारित चिन्तन की सम्पदा है। इसके सामने बेसिर-पैर की बातें नहीं चल सकती हैं। आर्यसमाज गलत बातों का खण्डन तथा सत्य एवं प्रमाणिक बातों का प्रचारक व प्रसारक है।

आर्यसमाज की आवश्यकता

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्यजनक आविष्कार एवं चमत्कार ला रहा है। भौतिक सुख-भोग तथा साधनों के अम्बार लगे हुए हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी मानव-समाज अनेक द्वन्द्वों, पीड़ाओं, दुःखों, रोगों, चिन्ताओं, तनावों, अशान्ति, संघर्षों, विकारों, अभावों आदि से भरा हुआ है। जीवन-जगत् में कलह-फूट, विद्रोह, लड़ाई-झगड़े, लूट-पाट तथा नानाविध बुराइयों का वातावरण तेजी से बनता जा रहा है। इतने कथा, प्रवचन, मन्दिर, तीर्थ, गुरु, महन्त, महाराज, भगवान् आदि सुख-शान्ति का सन्देश व उपदेश दे रहे हैं, मगर उनका प्रभाव उलटा ही नजर आ रहा है। पाप, अधर्म, अशान्ति, हिंसा, अन्याय, असत्य, भ्रष्टाचार आदि बढ़ते ही जा रहे हैं। लगता है कि कहीं मूल में भूल हो रही है। ऐसे वातावरण में आज के जीवन तथा जगत् में आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है। दुःख और पीड़ा है कि आज आर्यसमाज प्रचार, प्रभाव, विस्तार, अनुयायियों आदि की दृष्टि से सिकुड़ व सिमट रहा है। यह सब आर्यजनों को मिल-बैठकर सोचने-समझने व कुछ करने की शीघ्र जरूरत है। इसकी चिन्तनधारा सत्य, विज्ञान, वेद, तर्क, प्रमाण, युक्ति, व्यावहारिक आधार आदि पर चिन्तन, मनन करने की शक्ति देती है।

आर्यसमाज की अविद्या, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतकश्राद्ध, भूत-प्रेत, मिथ्या पोपलीला आदि न मानने से अलग पहिचान है। इसमें भौतिकता और आध्यात्मिकता, भोग तथा योग, शरीर व आत्मा, प्रकृति एवं परमात्मा के समन्वय का चिन्तन दिया जाता है। अन्य विचारधाराओं की अपेक्षा आर्यसमाज का जीवनदर्शन व्यावहारिक, तार्किक, बुद्धियुक्त, सत्यपरक तथा वैज्ञानिक है। इसे आधारहीन अन्धविश्वास, अज्ञानता, रूढ़िवादिता, धर्मान्धता आदि मान्य नहीं हैं। इसकी एकदम स्वच्छ, स्पष्ट, हृदय को छू लेने वाली, सीधी एवं सरल मान्यताएँ हैं। यह विचारधारा सत्य एवं विज्ञानसम्मत होने के कारण आज के जीवन एवं जगत् के अधिक निकट हैं।

आर्यधर्म मानव-निर्माण का सीधा-सच्चा व सरल मार्ग बताता है। यह विचारधारा जीवन को उलझाती नहीं, अपितु जटिल उलझनों को भी सहज सुलझा देती है। आर्यसमाज का आध्यात्मिक पक्ष बड़ा सुगम तथा उद्देश्यपूर्ण है, जो आज छूटा जा रहा है। आर्यों ! ऋषिवर का हम धार्मिक, आध्यात्मिक व यौगिक पक्ष को विस्मृत कर रहे हैं। धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता जीवन को पाप, अधर्म, बुराइयों, दोषों, व्यर्थ की बातों, पक्षपात की दौड़ स्वार्थ, अहंकार आदि दुष्प्रवृत्तियों में ब्रेक लगाते हैं। धार्मिक जीवन से मनुष्य सुखी, शान्त व व्यवस्थित बना रहता हैं आर्यसमाज में इस पक्ष को मजबूत बनाने की जरूरत है। जीवन व संसार के सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य आदि को जानने के लिये आर्यचिन्तन का अनुसरण श्रेयस्कर है।

मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाना है? मेरा इस संसार में क्या कर्म और धर्म है? मैं अपने जीवन को कैसे सफल और सार्थक बनाऊँ? आदि प्रश्नों का सही, सटीक, वैज्ञानिक, उपयोगी उत्तर आर्यसमाज के जीवनदर्शन

thearyasamaj.org

में है। इस संसार में रहते हुए अपने दायित्वों, कर्तव्यों, जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए जीवन को कैसे सुखी नीरोगी व आनन्दित बनाएँ? इहलोक व परलोक का चिन्तन करते हुए धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को कैसे प्राप्त करें? कैसे लम्बी आयु को प्राप्त करें? कैसे तनाव, चिन्ताओं, उलझनों, अशान्ति आदि से छुटकारा मिले? कैसे गृहस्थ को स्वर्ग बनायें? कैसे श्रेष्ठ एवं अनुकूल सन्तान का निर्माण करें? आदि अनेक जटिल, गम्भीर, विचारणीय, उपयोगी, अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर व उनके समाधान आर्यसमाज की विचारधारा में निहित हैं। इस विचारधारा में कहीं भी ढोंग, आडम्बर, प्रदर्शन, सौदेबाजी, व्यक्तिपूजा, पुजापा, चढ़ावा आदि नहीं है। जो है-वह स्पष्ट और सामने है। लुकछिपकर कानों और आँखों में भगवान् नहीं मिलाए जाते हैं। आर्यसमाज की अनेक महत्वपूर्ण प्रेरक, विचार, सिद्धान्त, आदर्श, मान्यताएँ, कर्मकाण्ड, जीवनदर्शन, उपदेश, सन्देश आदि हैं। जो आज के भूले-भटके अन्धकार, अविद्या, जड़ता, अन्धविश्वास, रूढ़ियों आदि में पड़े मानव को सन्मार्ग दिखा सकते हैं। ऐसे प्रेरक, सुधारक, उपयोगी, व्यावहारिक, सत्यपरक विचारधारा की आज बड़ी आवश्यकता है। यह विचारधारा ही आज के युग के साथ चल व संगति कर सकती है।

अन्त में, मेरा नम्र निवेदन है कि हे सम्मानित एवं प्रतिष्ठित संन्यासियो! वानप्रस्थियो! ब्रह्मचारियो! ऋषिभक्तो! दृढ़ आस्था वाले आर्यजनो! समस्त गुरुकुलों के स्नातको! विभिन्न संस्थाओं व संगठनो से जुड़े युवको! विद्वानों! उपदेशको! पुरोहितो! धर्मशिक्षको और आर्यसमाज से जुड़ी माताओ! बहिनो! बेटियो! भूले-बिसरे सभी आर्यविचारधारा के अनुयायियो! उठो! जागो! अपने स्वरूप को पहिचानो! अपने कर्तव्य को समझो! अपने को संभालो! बहुत हो चुके विवाद और झगड़े। ऋषि की आत्मा हमें पुकार रही है, दुनियाँ हमारी ओर देख रही है। कभी हम सभी के पथप्रदर्शक थे। जो लड़ाई, अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, अन्याय, असत्य, अधर्म, अभाव आदि के विरोध में लड़नी थी, वह आज हम व्यर्थ की बातों, स्वार्थ, अहंकार, पद, प्रतिष्ठा, अधिकार के लिये आस में लड़ रहे हैं। आर्यो अपने गुरुवर ऋषिवर को देखो। उनका जीवनादर्श हमें कदम-कदम पर पुकार रहा है। कहाँ के लिये चले थे? कहाँ जा रहे हो? जिन व्यर्थ की बातों में हम अपनी शक्ति, समय, धन, सोच और भाग-दौड़ को लगा रहे हैं, क्या इन्हीं बातों के लिये ऋषि ने आर्यसमाज बनाया था? शान्त, स्वच्छ होकर हृदय की धड़कनों पर हाथ रखकर अपने से पूछो, सोचो और समझो।

सब मिलकर संगठित होकर ऋषि के मिशन आर्यसमाज के लिये कुछ करते-कराने का ध्येय बनाओ। स्वयं जागो, दूसरों को जगाओ। निराश, हताश व चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। जरूरत है-चिन्तन करके सन्मार्ग पर व्रत व संकल्प के साथ आगे बढ़ने की। आर्यसमाज की हर तरह से रक्षा करनी हैं इसकी विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाना है। जनता जागेगी तो संगठनों, संस्थाओं, सभाओं अदि में भी परिवर्तन व जागृति आयेगी। हर स्थिति में हमें ऋषि और आर्यसमाज का काम करना है। आर्यसमाज को आगे बढ़ाना और उसे सुरक्षित रखना है। तभी मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण, उत्थान तथा सन्मार्ग संभव है। अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रान्तीय, क्षेत्रीय, स्थानीय महासम्मेलन, उत्सव, पर्व, जयन्तियाँ आदि हमें एकत्र होने, मिल बैठकर सोचने, कुछ करने की प्रेरणा और आत्ममंथन का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों से संस्था, संगठन व मिशन की शक्ति, प्रभाव, एकता और अनुयायियों का परिचय मिलता है। आम भावनाशील जनता में नवस्फूर्ति-उत्साह, भावना, बल और विचारों में दृढ़ता आती है। लोगों में जोश उमड़ता है, उससे संगठन को बल मिलता है। निष्क्रियता, निराशा व भ्रान्तियाँ हटती हैं। जीवन और जगत को सन्मार्ग की प्रेरणा मिलती है। दुनियां की सबसे बड़ी शक्ति संगठन में मानी गई है। संगठन विचार, सिद्धान्त, कर्तव्य और अनुशासन से आगे बढ़ते है।

आर्यसमाज के पास तन, मन, धन, विचारशक्ति, वेदज्ञान, ऋषि दयानन्द आदि सब कुछ है। कोई कमी नहीं है। अपने में हर तरह से पूर्ण है। वर्तमान को संभालने, सुधारने और उद्देश्यपूर्ण बनाने की सिर्फ जरूरत है। वर्तमान संभल जायेगा तो भविष्य उज्जवल व प्रेरक है। चिन्ता नहीं, चिन्तन करना है। अपना सत्य कर्तव्यबोध समझना है। तभी ऋषिवर देवदयानन्द का स्वप्न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' साकार होगा, तब कह सकेंगे -सर्वे भवन्तुः सुखिनः।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की मान्यतायें

-स्वामी देवव्रत

महर्षि दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्य के प्रारम्भ में लिखते हैं- "मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ जो तीनों कालों में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है।" उन्होंने वेद एवं ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों के कथन को ही अपना मन्तव्य स्वीकार किया है। कोई वस्तु पुरानी है इसलिये उसका परित्याग एवं नवीन का ग्रहण उसके गुणदोष जानकर ही करना चाहिये।

वह नहीं नूतन कि जो प्राचीन की जड़ तक हिला दे।

जो पुरातन को नया कर दे उसे नूतन कहूँगा।।

युग प्रवर्तक वह नहीं मत जो नया अपना चलाये
भूलों को पथ जो दिखाये शरण में उसकी रहूंगा।।

सच्चा समाज संशोधक या युगप्रवर्तक वह नहीं होता जो तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये नवीन कार्य प्रणाली या नवीन सिद्धान्तों को गढ़ने का प्रयत्न करता है। जैसे नाली में एकत्रित कूड़ा-कचरा साफ कर देने पर पानी निर्बाध रूप में फिर से चलने लगता है वैसे ही समाज, राष्ट्र या धर्म जब रूढ़ियों कुरीतियों या अन्ध विश्वासों से आच्छादित हो जाता है तब इन्हें दूर करना अनिवार्य हो जाता है। महर्षि दयानन्द इसी श्रेणी के महापुरुष हैं। आइये उनकी मान्यताओं का दिग्दर्शन और उन द्वारा प्रवाहित वैदिक ज्ञान गंगा में डुबकी लगाकर अपने को पवित्र करें।

1. एक ईश्वर- महर्षि दयानन्द अनेक देवी-देवताओं, पीर-पैगम्बरों के स्थान पर एक ईश्वर को मानते हैं जिसका मुख्य नाम 'ओ3म्' है। गुणों के आधार पर ईश्वर के अन्य बहुत सारे नाम हैं - **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'।**

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु और सृष्टि कर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

2. वेद- वेद ईश्वर की वाणी है, जिसका ज्ञान सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को दिया। ईश्वरीय वाणी वही हो सकती है-

(क) जिसका ज्ञान सृष्टि के आदि में होना चाहिये।
(ख) जो सृष्टि के नियम और विज्ञान सम्मत हो।
(ग) जिसमें किसी देश का इतिहास, भूगोल या व्यक्ति विशेष का इतिहास न होकर सबके लिये उपदेश हो।

इस कसौटी पर वेद ही खरा उतरता है। इसीलिये महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म बतलाया है।

3. दार्शनिक मान्यता- महर्षि दयानन्द ईश्वर, जीव प्रकृति तीनों को अनादि मानते हैं। जैसे घड़ा बनाने में मिट्टी, कुम्हार और उसके दण्ड-चक्रादि का होना आवश्यक है वैसे ही परमेश्वर ने प्रकृति से सृष्टि की रचना जीवों के लिये की है। इसमें यही प्रयोजन है कि जीवात्मा उत्तम कर्म कर मुक्ति सुख को प्राप्त होवें। दूसरा प्रयोजन यह है कि यदि ईश्वर सृष्टि की रचना नहीं करता तो उसका ज्ञान कोई कैसे प्राप्त कर करता?

4. धार्मिक मान्यता- धर्म वही है जिससे इस लोक और परलोक दोनों की प्राप्ति होवे। **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** समस्त वेद धर्म का मूल है। सामान्यतः कर्त्तव्य पालन, न्याय परोपकार और सत्याचरण का नाम धर्म है। परन्तु धर्म कोरा अन्धविश्वास न होकर जो तर्क की कसौटी पर खरा सिद्ध हो सके उसी को धर्म कहते हैं।

धर्म और सम्प्रदाय दोनों में भेद है। सम्प्रदाय किसी गुरु, आचार्य या व्यक्ति विशेष द्वारा प्रवर्तित होता है जिसमें कर्मकाण्ड, पूजा पद्धति और कुछ जनहित की बातें होती हैं। धर्म उन शाश्वत गुणों का नाम है जिन्हें संसार के सभी लोग निस्संकोच स्वीकार कर सकें। जैसे- सत्य बोलना, निरपराध प्राणी की हिंसा न करना, चोरी का त्याग, परोपकार, दया और संयम-सदाचार का पालनादि। इन्हीं का नाम धर्म है।

5. सामाजिक मान्यतायें- (क) महर्षि दयानन्द जन्म के स्थान पर गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर

thearyasamaj.org

वर्ण व्यवस्था और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिये चार आश्रमों एवं सोलह संस्कारों को मानते हैं। जन्म से कोई छोटा-बड़ा न होकर उत्तम कर्मों से ही ऊँची स्थिति को प्राप्त होता है।

(ख) वेद पढ़ने का सबको अधिकार है। जैसे ईश्वर के बनाये हुये वायु, जल, अग्नि, पृथिवी आदि सभी के लिये हैं वैसे ही वेद पढ़ने का मानव मात्र के लिये स्वयं वेद ने विधान किया है-यथेमां कल्याणीं वाचमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्राय चार्याय स्वाय चारणाय च। (यजु.)

(ग) महर्षि दयानन्द एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज स्त्री-पुरुष सभी को अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का समर्थन करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सर्वप्रथम जालन्धर में पुत्री पाठशाला खोली। उस समय लड़कियों को पढ़ाने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

6. शिक्षा सम्बन्धी मान्यता- महर्षि दयानन्द सबको अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने के समर्थक थे। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में वे लिखते हैं- "यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पांचवे अथवा आठवें वर्ष के आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। जो न भेजे वे दण्डनीय हों। चाहे राजा का लड़का हो चाहे रंक का गुरुकुलों में सबको तुल्य खान-पान, वस्त्र, आसन दिये जायें। सबको तपस्वी होना चाहिये। लड़के और लड़कियों की पाठशाला अलग-अलग होनी चाहिये।

7. इसी प्रकार प्रजातान्त्रिक प्रणाली, गौ-रक्षा, कृषि, पञ्च महायज्ञादि पर उन्होंने बल दिया है। परन्तु उनका सबसे अधिक आग्रह सत्य के लिये था। इसी के लिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और सत्य के ग्रहण तथा असत्य को छोड़ने का आह्वान किया। **थे न मठ मन्दिर, हवेली हाट ठाट बाट जोगी न जमात कोई चेली थी न चेला था।**

तन पे न थे सुवस्त्र मिठाई पकवान कहाँ साथी था न संगी कोई पैसा था न धेला था।।

सत्य की सिरोही से संहारे सब असत्य मत संकट विकट मर्दानगी से झेला था।

एक ओर सारी दुनिया के लोग थे प्रकाश एक ओर महर्षि दयानन्द अकेला था।।

आईये महर्षि दयानन्द की मान्यताओं को अपनी मान्यतायें बनायें जिससे मानव मात्र का कल्याण हो सके।

हम केवल निर्माण करें

त्याग विनाशक अहं भावना
त्याग आसुरी रूप साधना
अन्यों के प्रति अशुभ कामना
मौन साध औ कर्मठ बनकर मंजिल पर प्रस्थान करें।। 1।।

उस ईश्वर की इस धरती पर
मानव मानव सभी बराबर
मानवता ही धर्म समझकर
अपना तिल तिल भेंट चढ़ाकर मानव का कल्याण करें।। 2 ।।

आजीवन चलना ही चलना
जब तक लक्ष्य न पायें अपना
मृत्यु रूप है अरे ठहरना
एक जन्म ही नहीं धेय पर जन्म-जन्म बलिदान करें।। 3 ।।

जनता हमें निहारेगी तब
दुनियाँ चरण पखारेगी तब
आरती कोटि उतारेगी तब
जगती के आकर्षण के प्रति कोमल उर पाषाण करें।। 4 ।।

उचित नहीं करना आलोचन
क्या सम्भव इससे परिवर्तन
बढ़ें विश्व में प्रेमपूर्ण बन
हम भी रूप निहारें अपना अपना अनुसन्धान करें।। 5 ।।

बैंक सम्बन्धी कार्यवाहियों के लिए जानकारी - (बैंक का नाम - AXIS BANK) आर्य वीर विजय का बैंक एकाउण्ट
नं. 039010100010766 IFSC Code : UTIB0000039

thearyasamaj.org

मांँसाहार की हानियाँ

- स्वामी देवव्रत

मनुष्य की प्रकृति मूलतः मांस खाने की है या नहीं, क्या मांस खाना आवश्यक है और क्या मांस से अन्न, फल, दुग्ध की अपेक्षा बल अधिक बढ़ता हैत्र इसपर क्रमशः विचार करना चाहिए।

घास खानेवाले और मांसाहारी प्राणियों में निम्न भेद है।-

1. मांसाहारियों की आँत घास और फल-फूल खानेवाले प्राणियों की अपेक्षा छोटी रहती है तथा उनके अन्त्र-पुच्छ नहीं होती।

2. मांसाहारी जिह्वा से चप-चप करके पानी पीते हैं। इसके विपरीत घास खानेवाले पशु मुँह टिकाकर और घूँट भरकर पानी पीते हैं।

3. मांसाहारी मांस को निगलते हैं। इनके आमाशय तथाअ ाँतों से घास खानेवाली प्राणियों की अपेक्षा चार गुणा अधिक अम्ल का स्राव होता है। घास खानेवाले प्राणी जुगाली करते या घास को चबाकर खाते हैं।

4. प्रकृति ने मांसाहारी प्राणियों की रचना इस प्रकार से की है कि जिससे वे मांस को चीर-फाड़ सकें। इसके साथ ही उन्हे नाखून और सुदृढ़ पञ्जे दिये हैं।

इस विश्लेषण के आधार पर मनुष्य के गुण-कर्म-स्वभाव घास-फल-फूल खानेवाले प्राणियों के साथ मिलते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि वह मूलतः शाकाहारी है, यद्यपि संगति या परिस्थितिवश मांसाहार भी उसे सात्म्य हो गया है।

क्या मांस खाना शरीर के लिए आवश्यक है? प्रोटीन भोजन का मुख्य घटक है। शरीर के लिए जिन आवश्यक अमीनो अम्ल की अपेक्षा है वे ग्यारह प्रकार के अमीनो अम्ल मांस तथा अण्डे की जर्दी में पाए जाते हैं तथा शरीर के लिए अधिक उपयोगी हैं। इसके विपरीत अन्न तथा दालों में सभी अमीनों अम्ल नहीं हैं। यह तर्क मांसाहार के समर्थन में प्रायः दिया जाता है। यह सत्य है कि इनमें विद्यमान प्रोटीन शारीरिक दृष्टि से उच्चकोटि का है, परन्तु दूध में भी वे सब अमीनो अम्ल विद्यमान हैं जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है। अन्न, दाल और दूध का समुचित मात्रा में उपयोग सभी प्रोटीन की पूर्ति कर देता है। इसके अतिरिक्त इनसे दूसरे पोषक तत्व भी प्राप्त होते हैं। मांसाहार से क्या दुष्परिणाम होते हैं इसका विवेचन श्री आन्द्रेवेन लिजेबेथ ने अपनी पुस्तक 'योग सैल्फ टाट' के शाकाहारी या मांसाहारी अध्याय में बुद्धिमत्तापूर्वक किया है जिसे उपयुक्त समझकर यहाँ उद्धृत किया जाता है-

1. "मांस जिसमें कि मुख्यतः पेशियाँ होती हैं, अल्प शक्ति का भोजन है क्योंकि इसमें विटामिन और खनिज लवण अत्यल्प मात्रा में होते हैं। इसको पचाने के लिए शरीर में सुरक्षित सूक्ष्म पोषक तत्वों की आवश्यकता पड़ती है जोकि पुनः इस निकृष्ट भोजन से प्राप्त नहीं होते। मांस को तलने, भूनने और डिब्बा-बन्द करने से इन तत्वों की और भी कमी हो जाती है।

2. मांस में प्रोटीन की अधिकता रहती है जिससे शरीर की चयापचय-प्रक्रिया बिगड़ जाती है तथा प्यूरिक औरयूरिक अम्ल नामक विषों की उत्पत्ति होने के कारण गठिया रोग की उत्पत्ति होती है।

3. मृत पशु की मांसपेशियों में अनेक दूषित तत्व विद्यमान रहते हैं जिनमें जैनथिन विष मुख्य है।

4. मांस एक उत्तेजक पदार्थ है। यही कारण है कि लोग इसे खाना पसन्द करते हैं। प्रत्येक उत्तेजक पदार्थ बाद में अवसाद करने वाला होता है। इस सुस्ती को दूर करने के लिए किसी दूसरे उत्तेजक द्रव्य चाय, कॉफी, तम्बाकू या शराब की आवश्यकता पड़ती है। शराब और मांस का परस्पर सम्बन्ध होता है। एक का प्रयोग करने के पश्चात् दूसरा भी स्वतः लिया जाता है।

5. अपनी स्वाभाविक अवस्था में मांस अरुचिकारक एवं अप्रिय होता है (यदि स्वयं मारकर मांस खाएँ तो संसार के अधिकतर व्यक्ति इसे छोड़ दें)। इसके विपरीत फल, अन्न, शाकादि की सुगन्ध से ही मन खाने को करता है। कोई भी मांसाहारी प्राणी नमक, मिर्च, मसाले मिले हुए तथा तले-भुने मांस को नहीं खाएगा।

6. केवल अकेले मांस पर जीवित रहना असम्भव है, क्योंकि इसमें भोजन के अन्य आवश्यक घटक श्वेतसारादि नहीं होते। केवल एस्कीमो और किरगीज इसके अपवाद हैं। वे भी मृत पशु का रक्त, यकृत, गुर्दे यहाँ तक कि आँतें भी खाते हैं। ऐसे ही सभी मांसाहारी प्राणी समस्त पशु को

thearyasamaj.org

खाते हैं, जिसके कारण उन्हें सभी आवश्यक तत्व मिल जाते हैं। एस्कीमो और किरगीज की औसत आयु 20-26 वर्ष है तथा ये अधिकतर धमनी-काठिन्य से मरते हैं जोकि मांसाहार का परिणाम है।

7. मांस, अण्डे और मछली में कुछ अवगुण समान हैं। यदि उन्हें अकेला पड़ा रहने दिया जाए तो वे अतिशीघ्र सड़ने लगते हैं। दुग्ध सड़ता नहीं अपितु खट्टा होकर फट जाता है। यह पृथक् प्रक्रिया है। इसी प्रकार अन्नों में भी खमीर उठता है। इस प्रक्रिया को सड़ना नहीं कह सकते।

8. इनके अतिरिक्त यह भी एक तथ्य है कि मांसाहार करने से पशुत्व के कुसंस्कार (क्रोध, घृणा, स्वार्थ, कायरता) पड़ते हैं जिससे आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

जहाँ तक बल का प्रश्न है हाथी, भैंसा, सूअर, गैण्डा और बैल, घोड़े इत्यादि घास खानेवाले पशु शेर, चीता तथा अन्य मांसाहारी प्राणियों से बल में अधिक हैं। सामने से मुकाबले में सिंह इनका सामना नहीं कर सकता। वह धोखे से पीठ-पीछे या छिपकर आघात करता है। मांस खाने से मांस तो बढ़ता है, परन्तु बल, स्फूर्ति, उत्साह नहीं बढ़ते। शेर स्वयं बहुत आलसी है। शिकार के समय को छोड़कर हर समय झाड़ी या गुफा में पड़ा सोया करता है। मांसाहारी का श्वास बहुत शीघ्र फूलता है। उससे गर्मी सहन नहीं होती।

यहाँ कुछ व्यक्ति तर्क देते हैं-पश्चिमी देशों में मांसाहार मुख्य भोजन है जिसके कारण वहाँ के निवासी बलिष्ठ, खेलों में स्वर्ण-पदक विजेता और ज्ञान-विज्ञान में भी हमारे देश से आगे बढ़े हुए हैं। इसका समाधान यह है कि ये गुण उनमें मांसाहार से नहीं आए, अपितु वहाँ बचपन से ही खेलों को अनिवार्य विषय बनाकर अच्छा प्रशिक्षण, उचित निरीक्षण, प्रोत्साहन और सन्तुलित भोजन दिया जाता है जिसका हमारे देशमें प्रायः अभाव है। यदि बचपन से ही खेल खेले जाएँ तो खिलाड़ी में अधिक ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण उसका दम नहीं फूलता। किसी भी खिलाड़ी को 80-90 ग्राम से अधिक प्रोटीन की दैनिक आवश्यकता नहीं है। •

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के ग्रीष्मकालीन शिविर

11 - 18 अप्रैल	बीदर (कर्नाटक)
19-26 अप्रैल	भालकी (बीदर) आर्य वीरांगना दल
3-10 मई	गेरवाणी, छत्तीसगढ़
2-9 मई	बूढ़ा, जि. मन्दसौर (म. प्र.)
4-11 मई	गुरुकुल सोनगढ़ (गुजरात)
12-21 मई	उज्जैन (म.प्र.)
18-26 मई	लोहरदगा (झारखण्ड)
3-10 मई	आर्य वीर दल मुम्बई
23-30 मई	औरय्या (उ.प्र.)
1-9 जून	बान्दा (उ.प्र.)
1-7 जून	ओ3म् योग संस्थान पाली (फरीदाबाद)
17-24 मई	आर्य वीरांगना दल दिल्ली
22-31 मई	आर्य वीर दल दिल्ली
1-10 मई	कामारेडी निजामाबाद - तेलंगाना
1-10 मई	गुण्टूर आन्ध्र प्रदेश
17-24 मई	ऋषि उद्यान अजमेर आर्य वीर दल राज.

हरयाणा प्रान्त के शिविर

31 मई से 7 जून	आर्य वीर, आर्य वीरांगना 2 शिविर गुड़गांव
1-7 जून	ओ३म् योग संस्थान पाली, फरी.
8-14 जून	पलवल
8-14 जून	दयानन्द मठ रोहतक
15-21 जून	आर्य वीरांगना शिविर भक्ति आश्रम रोहतक
25-31 मई	आर्य बाल भारती स्कूल पानीपत
22-28 जून	दयानन्द वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फिरोजपुर झिरका (मेवात)
1-5 जून	गुरुकुल कुरुक्षेत्र आर्य वीर शिविर
6-10 जून	गुरुकुल कुरुक्षेत्र आर्य वीरांगना शिविर
1-14 जून	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ राष्ट्रीय शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर एस.एम.एस. स्कूल पंजाबी बाग में लगाया जायेगा।

thearyasamaj.org

गीत - वेद का आदेश मानो

चाहते हो एक हों सब प्यार की गंगा बहे तो
वेद का आदेश मानो-मानो 'संगच्छध्वं संवदध्वं
सं वो मनांसि जानताम्।

बढ़ रहा अज्ञान तम चहुँ दिशा की ओर है,
सुप्त है मनु चेतना आतुरता का शोर है,
ज्योति धूमिल हो रही है आज आत्म विवेक की,
है यहाँ सर्वत्र चर्चा, ऐश्वर्य के अभिषेक की,
मन्त्र मुग्ध हुए से सब क्यों मानते हर बात हैं,
रात को दिन कह रहे और दिन को कहते रात हैं,
चाहते हो रोक पाएं, नाश के बढ़ते चरण तो....

धर्म कोई व्रत नहीं है आज लेकर छोड़ दोगे,
धर्म कोई जप नहीं है कामना पूरी करोगे,
धर्म है पुस्तक न कोई पढ़ जिसे मुक्ति मिलेगी,
धर्म है पूजा न वन्दन जिससे धन दौलत बढ़ेगी,
धर्म है वह आचरण दुःख दर्द जो हरता सभी का
धर्म है वह भावना अपनत्व दे पाये सभी को,
चाहते हो जानना यह धर्म क्या है कर्म क्या तो.....

है बड़ा बनता न कोई शतगुणा धन को बढ़ा कर,
कौन ऊंचा हो सका अट्टालिका ऊँची बनाकर,
यश नहीं मिलता सदा अखबार अंकित सुर्खियों से,
कौन अर्जित कर सका विश्वास ऊँची कुर्सियों से,
बैठकर छोटों के संग दुःख दर्द उनका जान पाया,
बन गया सबसे बड़ा जो बेबसों के काम आया,
चाहते हो टूट जाये मान का झूठा भरम तो.....

तन मिले से कुछ न होगा दूरियाँ मन की मन हटाओ,
खून के रिश्तों के संग में प्यार के रिश्ते बढ़ाओ
चाहते सम्मान सीखो मान देना दूसरों को,
चाहते पाना तो सीखो दान देना दूसरों को,
आतंक और शोषण दमन से क्या मिला है
क्या मिलेगा,
घर जलाया दूसरों का कल हमारा भी जलेगा,
चाहते हो रोक पाएं स्वार्थ के बढ़ते कदम तो.....

आचार की शुभ संहिता है वेद पुस्तक धर्म की,
तुम चाहे मानो न मानो वेद पुस्तक कर्म की,
संविधान सकल जगत का सृष्टि के संग-संग मिला है,
वेद में जीवन का दर्शन और जीने की कला है,
हो गये कैसे प्रमादी आज रह रह सोचते हैं,
घर हमारे जो छिपा घर दूसरों के खोजते हैं,
चाहते हो लौट आये शान्ति समृद्धि के दिन तो....

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गददे ही गददे

J.K. Singhal
S.K. Singhal

Singhal Furnishing

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004
Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

thearyasamaj.org

आर्य वीर विजय (मासिक)

25 दिसम्बर - 25 अप्रैल, 2014

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13

Reg. No. 42[illegible]3/84

प्रकाशनार्थ

सेवायाम्

श्रीमान्/श्रीमती विनय आर्य महामन्त्री

आर्य समाज

15- हनुमान रोड

नई दिल्ली- 1

आर्य समाज, सैक्टर 7,

फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37- E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'तप मिनी ऑफसैट प्रिंटर्स', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।